दुनिया सबकी

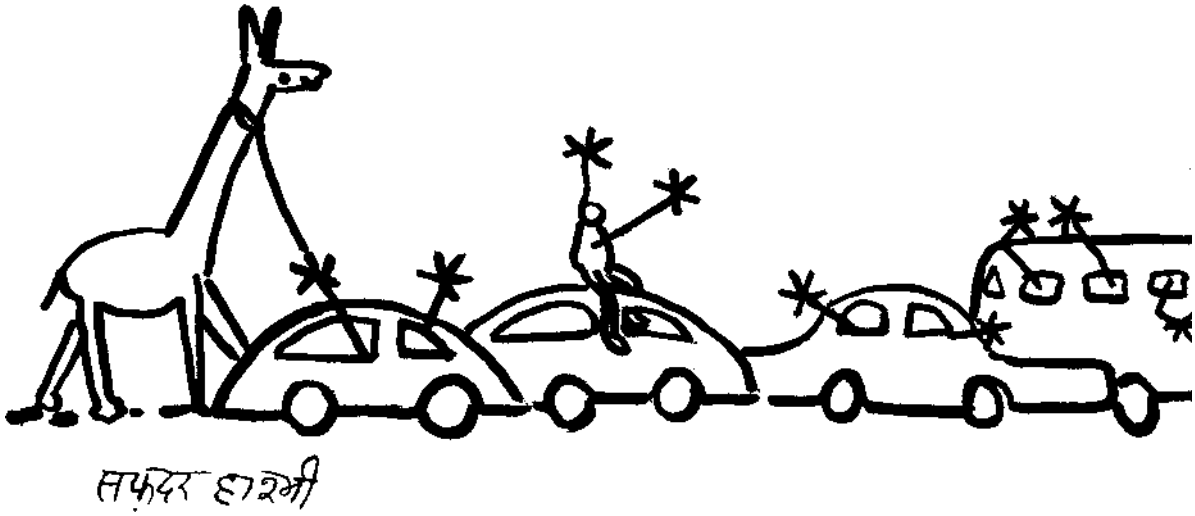

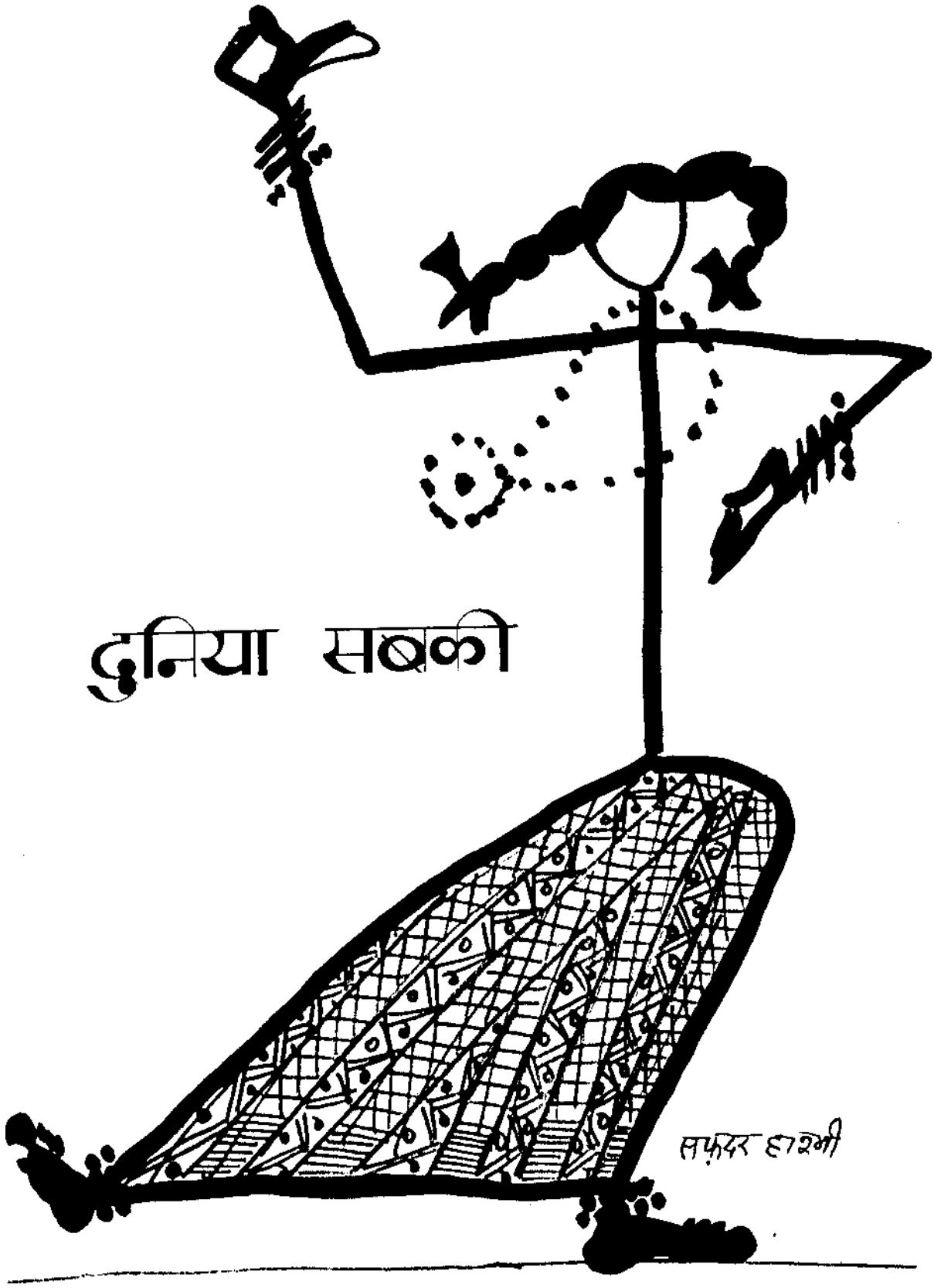
दुनिया सबकी
सफ़दर हाश्मी

दुनिया सबकी

अकबर राजा बड़ा सयाना
सब कुछ उसका देखा जाना
जो भी मिलता उसे सुनाता
अपने दुनिया-ज्ञान का गाना:
"अपन ने दुनिया देखी प्यारे,
देखे हमने चांद-सितारे
परबत, जंगल, नदी के धारे
टापू, सागर और किनारे।
शहर, गांव, कुटिया, चौबारे
कूचे, कटरे और गलियारे
परजा देखी, राजे देखे
गाजे देखे, बाजे देखे
ढोल, मंजीरे, ताशे देखे
नाटक और तमाशे देखे
राजपाट के चक्कर देखे
साधू देखे, फक्कड़ देखे
जहां तलक देखा हमने, सब पर अपना राज
इस दुनियां के हर कोने के हम हैं राजधिराज"

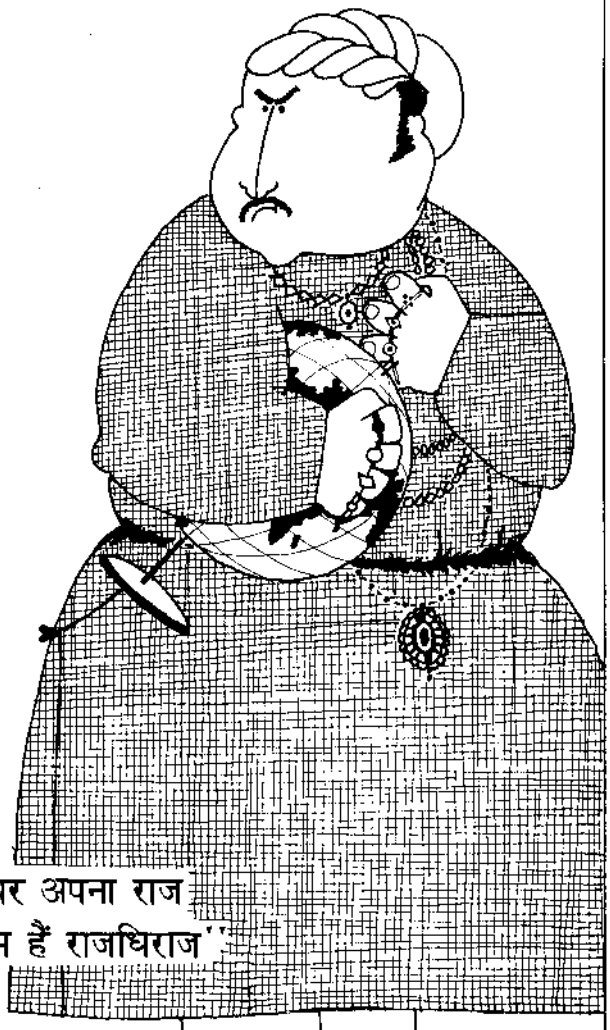

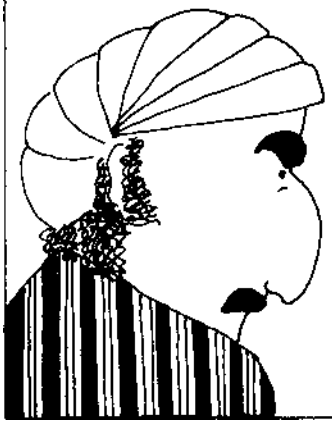

अकबर का था इक दरबारी
जिसका बीरबल नाम
क़द में छोटा, दुबला-पतला
काटे सबके कान।
बहुत चतुर था, समझ गया वह
राजा की बीमारी
अभिमान में आ राजा की
मति गई थी मारी।

इक दिन अकबर राजा निकला
किले का लेने चक्कर
और आंगन के बीचों-बीच
खा गया किसी से टक्कर।
देखा तो दालान में लंबा साधू इक लेटा है
ज़ोर से यूं खर्राटे ले ज्यूं कुंभकरण का बेटा है।

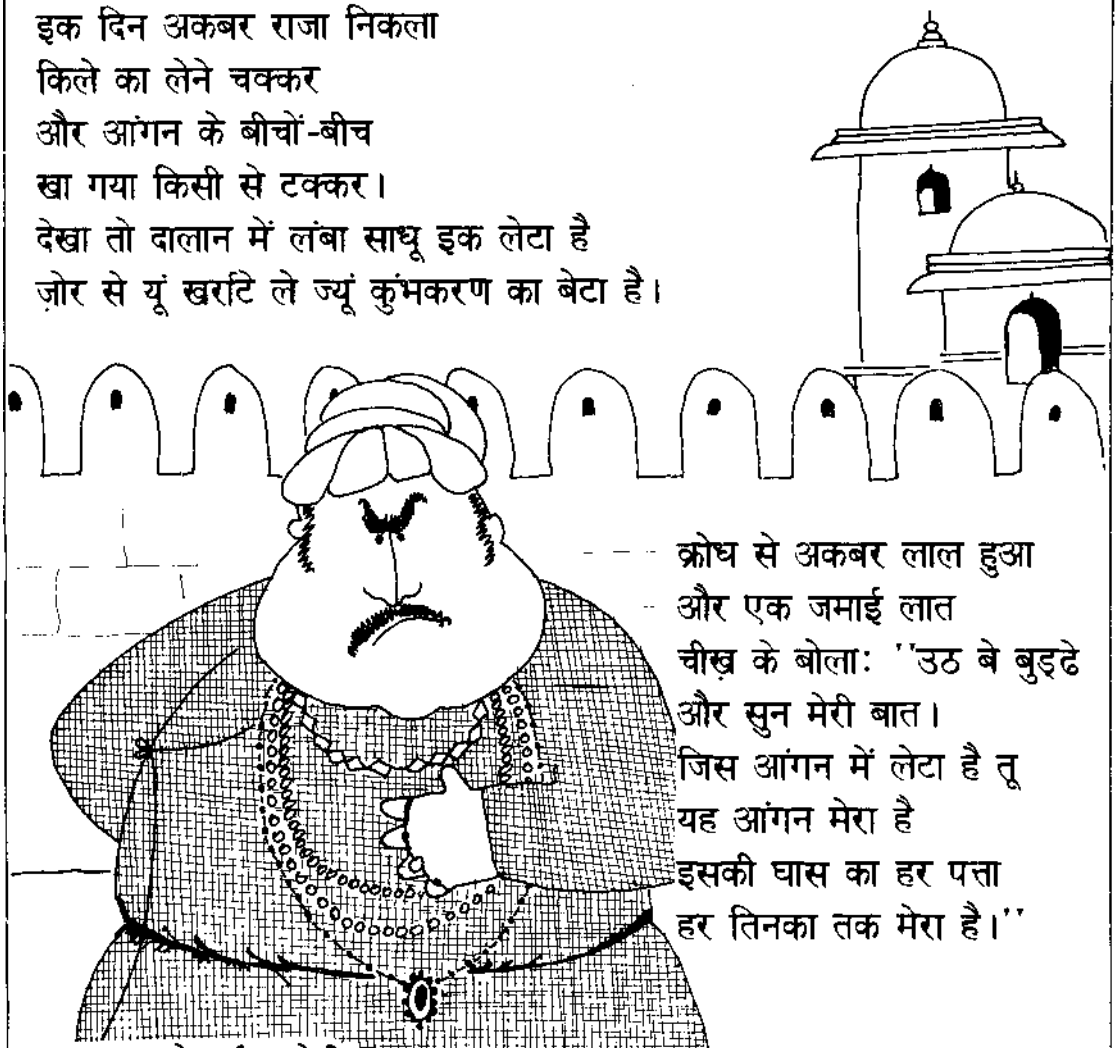

क्रोध से अकबर लाल हुआ
और एक जमाई लात
चीख़ के बोला: "उठ बे बुइढे
और सुन मेरी बात।
जिस आंगन में लेटा है तू
यह आंगन मेरा है
इसकी घास का हर पत्ता
हर तिनका तक मेरा है।"

उठ साधू ने गर्दन मोड़ी
कान खुजाये, नाक सिकोड़ी
हाथ खोलकर ली अंगड़ाई
पैर की हर उंगली चटखाई।
आंखें आधी खोल के बोला:
"जय शिवशंकर, जय बम भोला,
हरी घास का हर इक पत्ता
इस आंगन का हर इक तिनका
तू कहता है तेरा है?
तुझे मोह ने घेरा है।"

अकबर फिर गुर्रा कर बोला:
"उठा ले अपना डंडा-झोला
घास का हर तिनका, हर पत्ता
शहद की मक्खी का हर छत्ता
फतहपुरी की सब दीवारें
सारे गुंबद, सब मीनारें
हर खिड़की, सारे दरवाजे
नये पुराने, बासी ताज़े
सब कंकड़ और पत्थर सारे
सभी हमारे, सभी हमारे।"
साधू ने दाढ़ी सहलाई
आंखों की पुतली फैलाई
मुंह को बंद किया फिर खोला
धीरे-धीरे डर कर बोला:
"अगर इज़ाज़त दो महाराजा
पूछूं एक सवाल
फतहपुरी में रहते तुमको
हुए हैं कितने साल?"

अकबर बोला: "इसी महल में जनम हुआ था मेरा
इसी किले में देखा मैंने पहले पहल सवेरा"
साधू बोला: "तुमसे पहले कौन यहां था राजा?
किसके नाम का बजता था इस किले में पहले बाजा?"
अकबर बोला: "साधू जी तुम हो कोरे अनजान
मुझसे पहले यहां रहे हैं मेरे अब्बाजान।"
"आपके अब्बा जान से पहले कौन यहां रहते थे?"
"बाबर दादा सबही जिनको शहनशाह कहते थे।"
"उनके अब्बा से, दादा से, परदादा से पहले
कौन थे वह जो मालिक थे इस सब के सबसे पहले
और अगर सब मालिक थे, क्यूं नहीं ले गये साथ
दुनियां में क्यूं छोड़ गये ये महल और ये बाग़ात?
मुझे बताओ क्या यह ठीक नहीं है अकबर भाई
सभी ने अपने जीवन की कुछ घड़ियां यहां बिताईं
थोड़ी देर रहे दुनिया में, चले गये फिर आगे
अपना जीवन बिताके सब ही अपने रस्ते लागे!"

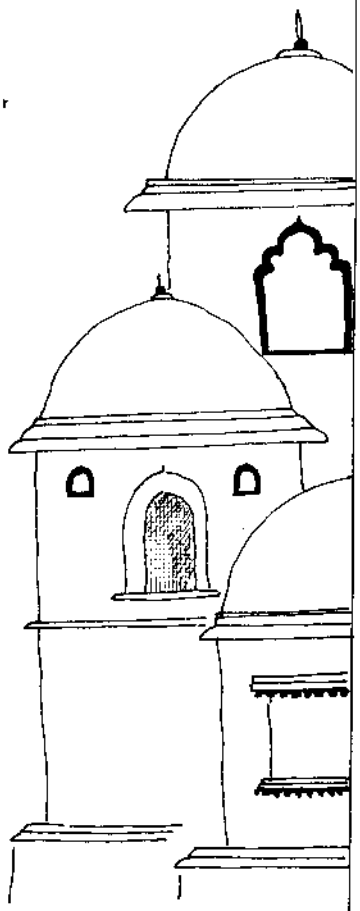

अकबर बोला: "सच कहते हो
ओ साधू महाराज
मैं ही नहीं ऐसा इकलौता
किया हो जिसने राज।"

साधू बोला: "क़िला तुम्हारा,
है बस एक सराय
जिसमें राही ठहर सके
पर साथ न ले जा पाये।

महल ही क्या यूं समझो तुम
कि दुनिया एक सराय
आते जाते राही के
रुकने के काम जो आये।
किस बूते पर कहते हो कि
है यह सिर्फ़ तुम्हारा
नहीं तुम्हारी कोई चीज
वो घर हो या चौबारा।
ना ही तिनके, ना ही पत्ते
ना ही शहद के छत्ते
ना खिड़की, ना ही दरवाज़े
नहीं फूल, बासी या ताज़े
ना ही क़िले की ये दीवारें
ना गुंबद, ना ही मीनारें
नहीं तुम्हारी इस दुनिया में कोई चीज़ महाराज,
सोचके देखो, गांठ बांध लो, राज़ की है यह बात।''

अकबर राजा लाजवाब था, समझ में उसके आई,
या तो दुनिया सब की है या नहीं किसी की भाई।

अकबर को ख़ामोश देखकर साधू कुछ मुस्काया,
आंख मार कर बोला, ''राजा, तुमको मूर्ख बनाया
मैं हूं बीरबल दरबारी
साधू का भेस बनाये
ख़ाक करोगे राज अगर तुम
यह भी समझ न पाये।''
अकबर बोला: ''अरे बीरबल
तू है बड़ा शरीर,
मैं तो समझा था कि
सचमुच का है कोई फ़क़ीर।''

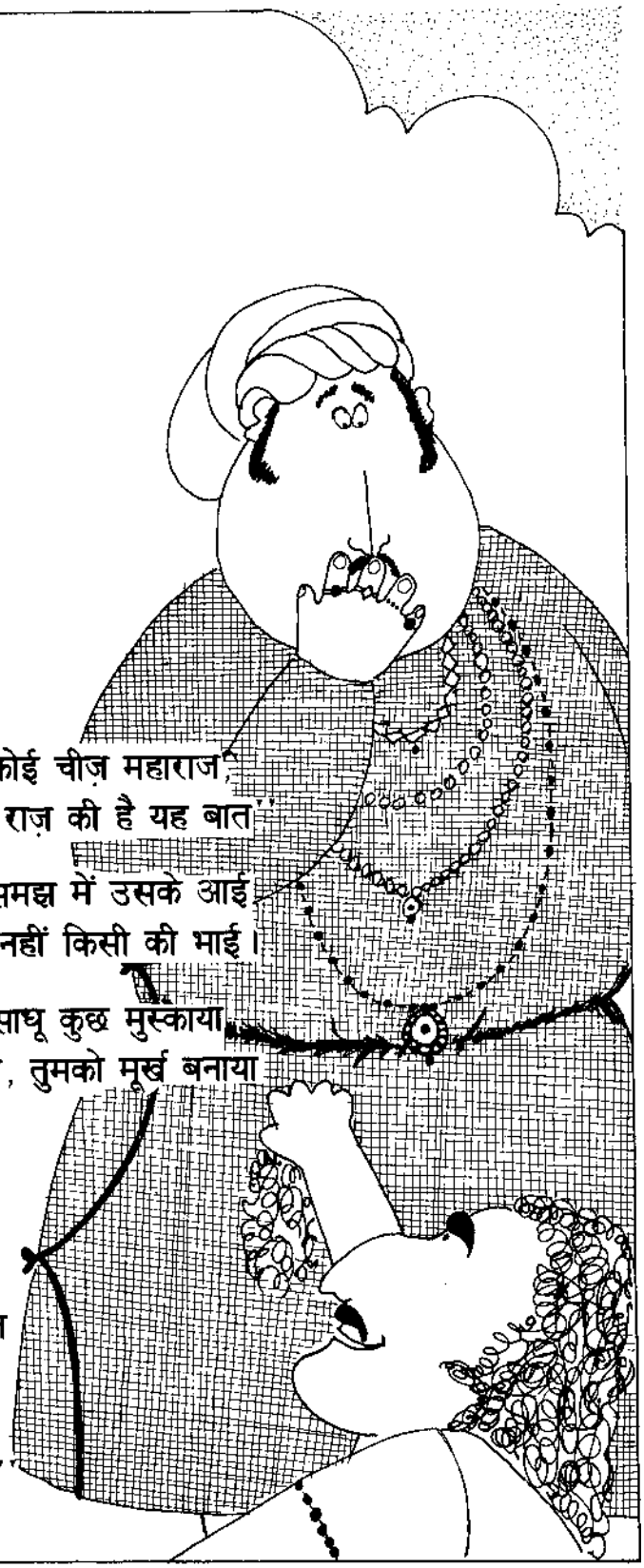

आज़ादी

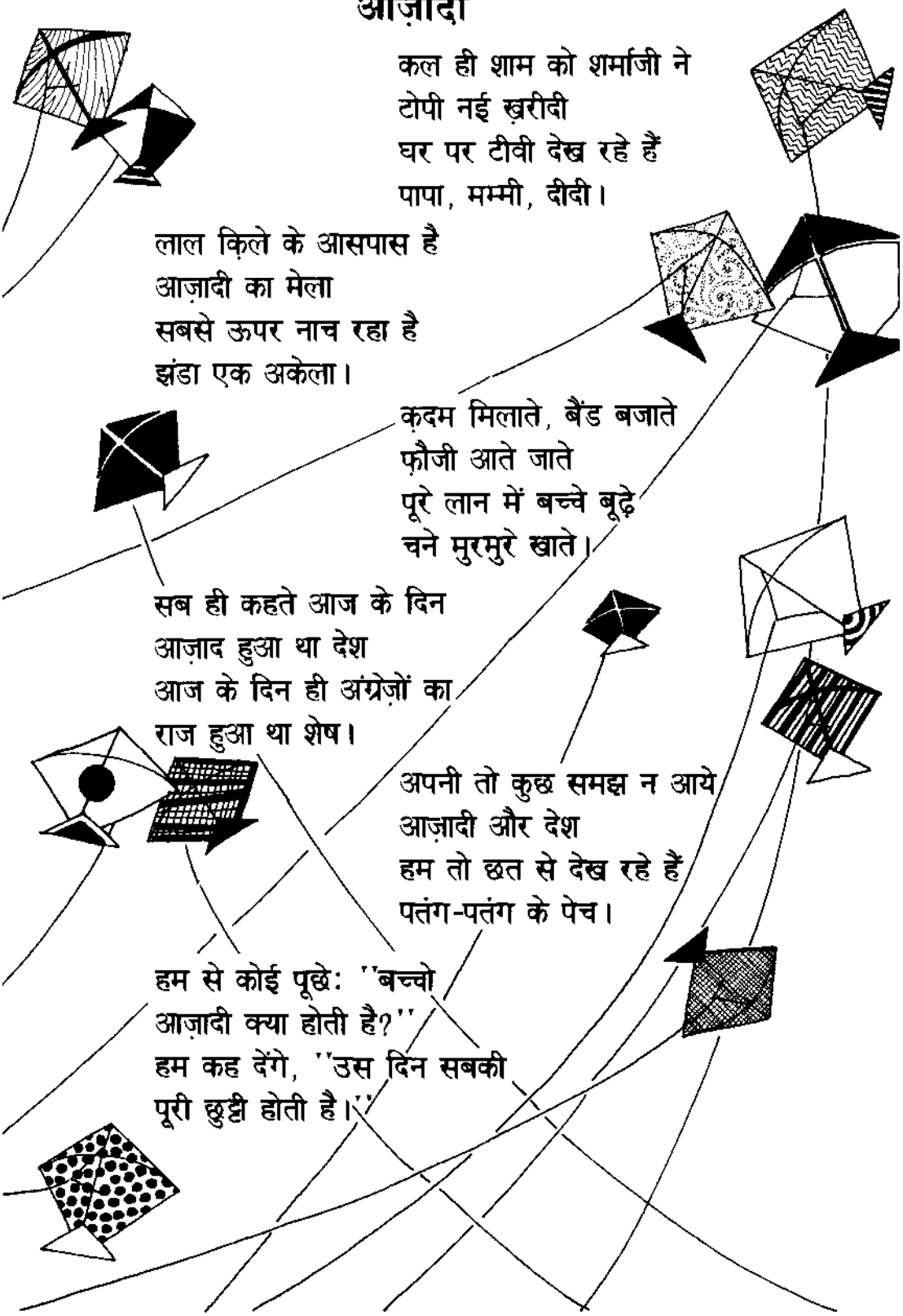

कल ही शाम को शर्माजी ने
टोपी नई ख़रीदी
घर पर टीवी देख रहे हैं
पापा, मम्मी, दीदी।

लाल क़िले के आसपास है
आज़ादी का मेला
सबसे ऊपर नाच रहा है
झंडा एक अकेला।

क़दम मिलाते, बैंड बजाते
फ़ौजी आते जाते
पूरे लान में बच्चे बूढ़े
चने मुरमुरे खाते।

सब ही कहते आज के दिन
आज़ाद हुआ था देश
आज के दिन ही अंग्रेज़ों का
राज हुआ था शेष।

अपनी तो कुछ समझ न आये
आज़ादी और देश
हम तो छत से देख रहे हैं
पतंग-पतंग के पेच।

हम से कोई पूछे: "बच्चो
आज़ादी क्या होती है?"
हम कह देंगे, "उस दिन सबकी
पूरी छुट्टी होती है।"

पहली बारिश

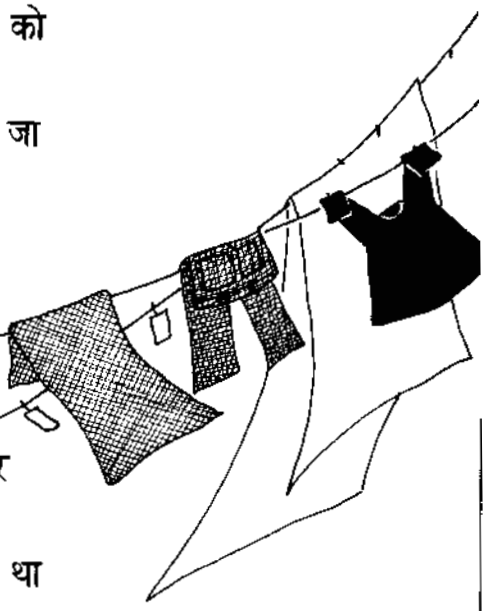

रस्सी पर लटके कपड़ों को
सुखा रही थी धूप
चाची पिछले आंगन में जा
फटक रही थी सूप।
गैया पीपल की छैंया में
चबा रही थी घास
झबरू कुत्ता आंखें मूंदे
लेटा उसके पास।
राज मिस्त्री जी हौदी पर
पोत रहे थे गारा
उसके बाद उन्हें करना था
छज्जा ठीक हमारा।
अम्मां दीदी को संग लेकर
गयी थीं राशन लेने
आते में खुतरू मोची से
जूते भी थे लेने।
तभी अचानक आसमान पर
काले बादल आये
भीगी हवा के झोंके अपने
पीछे पीछे लाये।

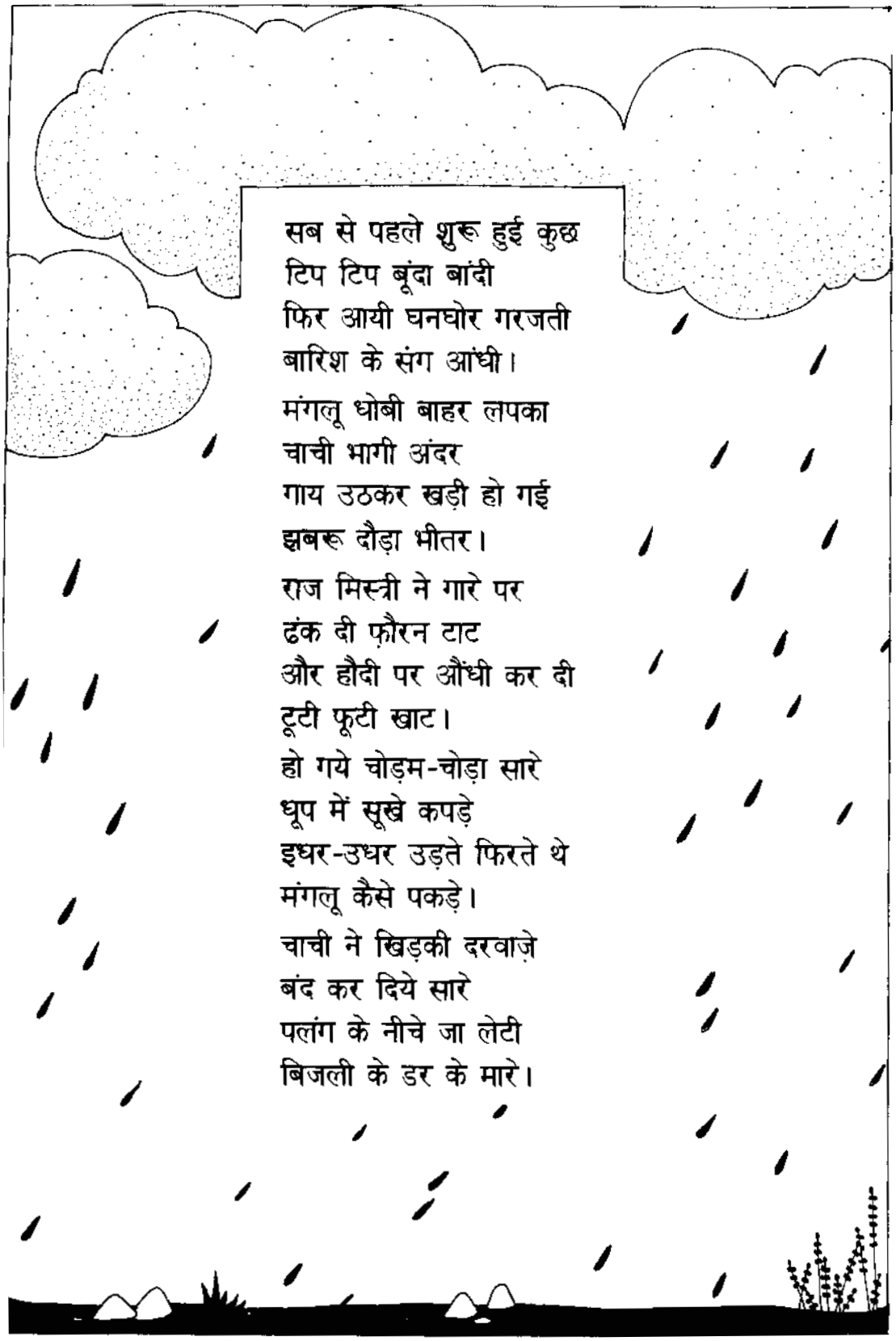

सब से पहले शुरू हुई कुछ
टिप टिप बूंदा बांदी
फिर आयी घनघोर गरजती
बारिश के संग आंधी।

मंगलू धोबी बाहर लपका
चाची भागी अंदर
गाय उठकर खड़ी हो गई
झबरू दौड़ा भीतर।

राज मिस्त्री ने गारे पर
ढंक दी फ़ौरन टाट
और हौदी पर औंधी कर दी
टूटी फूटी खाट।

हो गये चोड़म-चोड़ा सारे
धूप में सूखे कपड़े
इधर-उधर उड़ते फिरते थे
मंगलू कैसे पकड़े।

चाची ने खिड़की दरवाज़े
बंद कर दिये सारे
पलंग के नीचे जा लेटी
बिजली के डर के मारे।

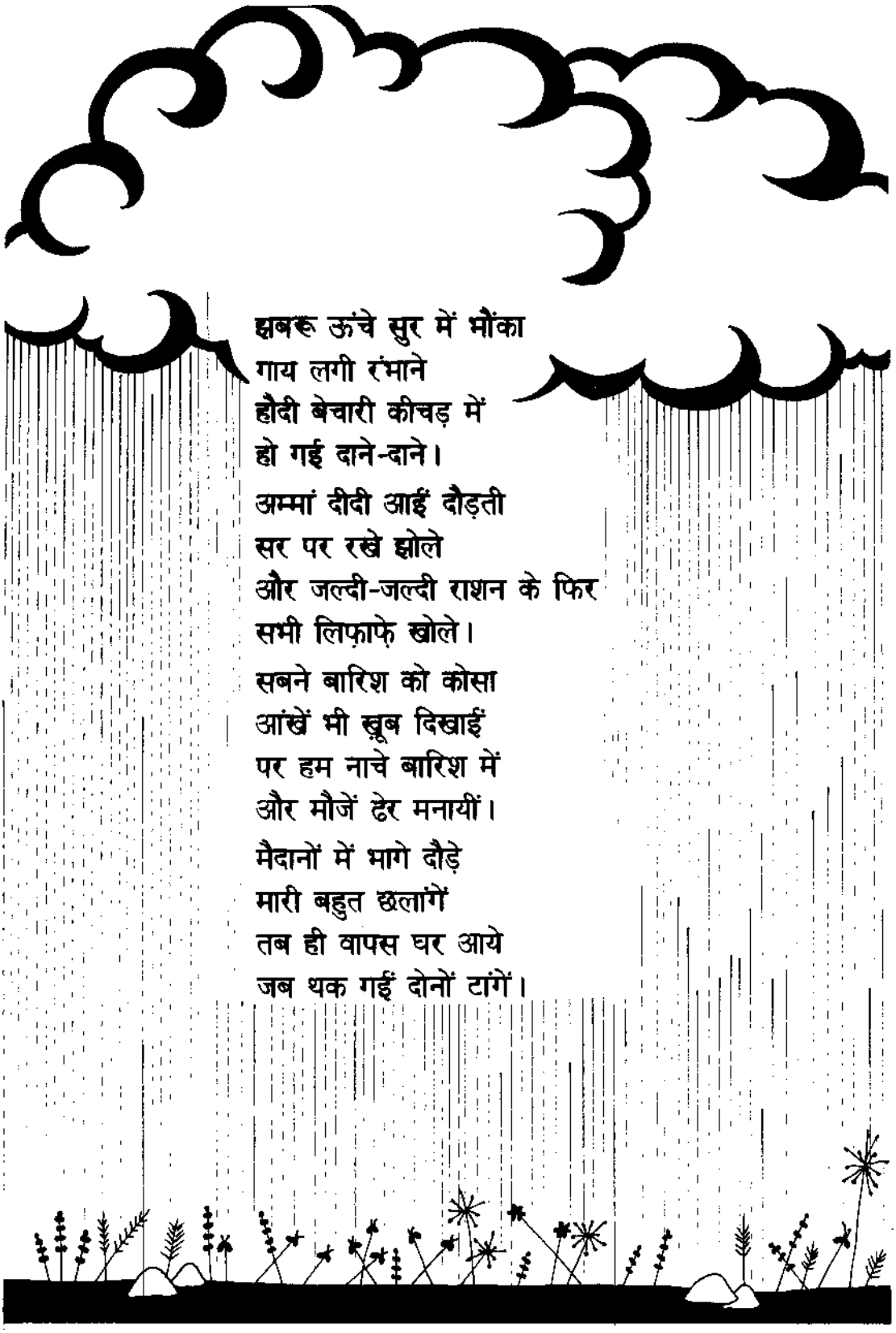

झबरू ऊंचे सुर में भौंका
गाय लगी रंभाने
हौदी बेचारी कीचड़ में
हो गई दाने-दाने।

अम्मां दीदी आईं दौड़ती
सर पर रखे झोले
और जल्दी-जल्दी राशन के फिर
सभी लिफ़ाफ़े खोले।

सबने बारिश को कोसा
आंखें भी खूब दिखाईं
पर हम नाचे बारिश में
और मौजें ढेर मनायीं।

मैदानों में भागे दौड़े
मारी बहुत छलांगें
तब ही वापस घर आये
जब थक गईं दोनों टांगें।

होली

होली को सब क्यूं कहते हैं रंगों का त्यौहार
गिनती के छः सात रंग ही दिखते हैं हर बार।

काले पीले, हरे, बैंगनी, नील, गुलाबी, लाल
इन्हें छोड़कर किसी रंग के बिकते नहीं गुलाल।

हमसे पूछो तो होली है बेरंगा त्यौहार
उस से ज़्यादा रंगीं होता सब्ज़ी का बाज़ार।

अदरक, लस्सन, नींबू, बैंगन, शलजम और चुक़ंदर
प्याज़, टमाटर, गोभी, मेथी, हर दुकान के अंदर।

फूलों के रंगों की गिनती करने बैठो आज
हफ़्ते भर तक गिनने पर भी ख़तम न होगा काज।

कोई सलेटी, कोई बदामी, सिंदूरी, उन्नाबी
कोई दूधिया, कोई सुनहरा, ख़ाकी या नारंगी।

कोई बसंती, कोई नींबुई, कोई मोतिया होता
कोई फ़िरोज़ी, कोई भगवा, कोई गेरुआ होता।

फूल रुपहले और सफ़ेद और अस्मानी होते हैं
ऊदे, भूरे, तरबूज़ी और सरसोंई होते हैं।

चिड़ियों, कीड़ों, जानवरों के रंग अगर गिनवायें
जीवन भर बस बैठे-बैठे उनको गिनते जायें।

आंख खोलकर अगर कोई दुनिया को देखने पाये
होली का भरपूर मज़ा हर रोज़ उसे मिल जाये।

सुबह सवेरे रंगीं कपड़े पहनके बादल आयें
चिड़ियां रंगीं पर फैलाये ऊपर-नीचे जायें।

फूलों के संग करें तितलियां दिन भर हंसी ठिठोली
रोज़ शाम को सूरज खेले आसमान से होली।

किताबें

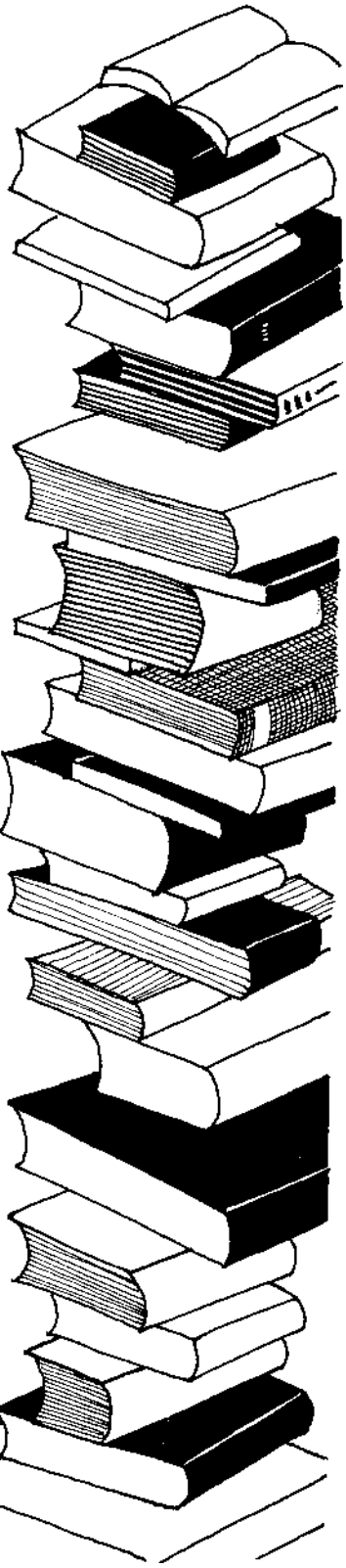

किताबें
करती हैं बातें
बीते ज़मानों की
दुनिया की, इंसानों की
आज की, कल की
एक एक पल की।
ख़ुशियों की, ग़मों की
फूलों की, बमों की
जीत की हार की
प्यार की, मार की।
क्या तुम नहीं सुनोगे
इन किताबों की बातें?
किताबें, कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।
किताबों में चिड़ियां चहचहाती हैं
किताबों में खेतियां लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के क़िस्से सुनाते हैं।
किताबों में रॉकिट का राज़ है
किताबों में साइंस की आवाज़ है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है।
क्या तुम इस संसार में
नहीं जाना चाहोगे?
किताबें, कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।

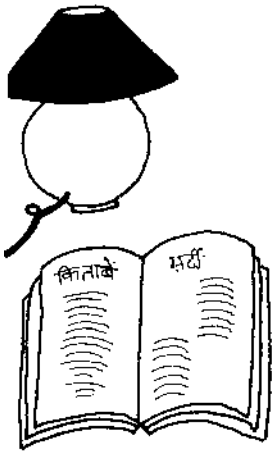

सर्दी

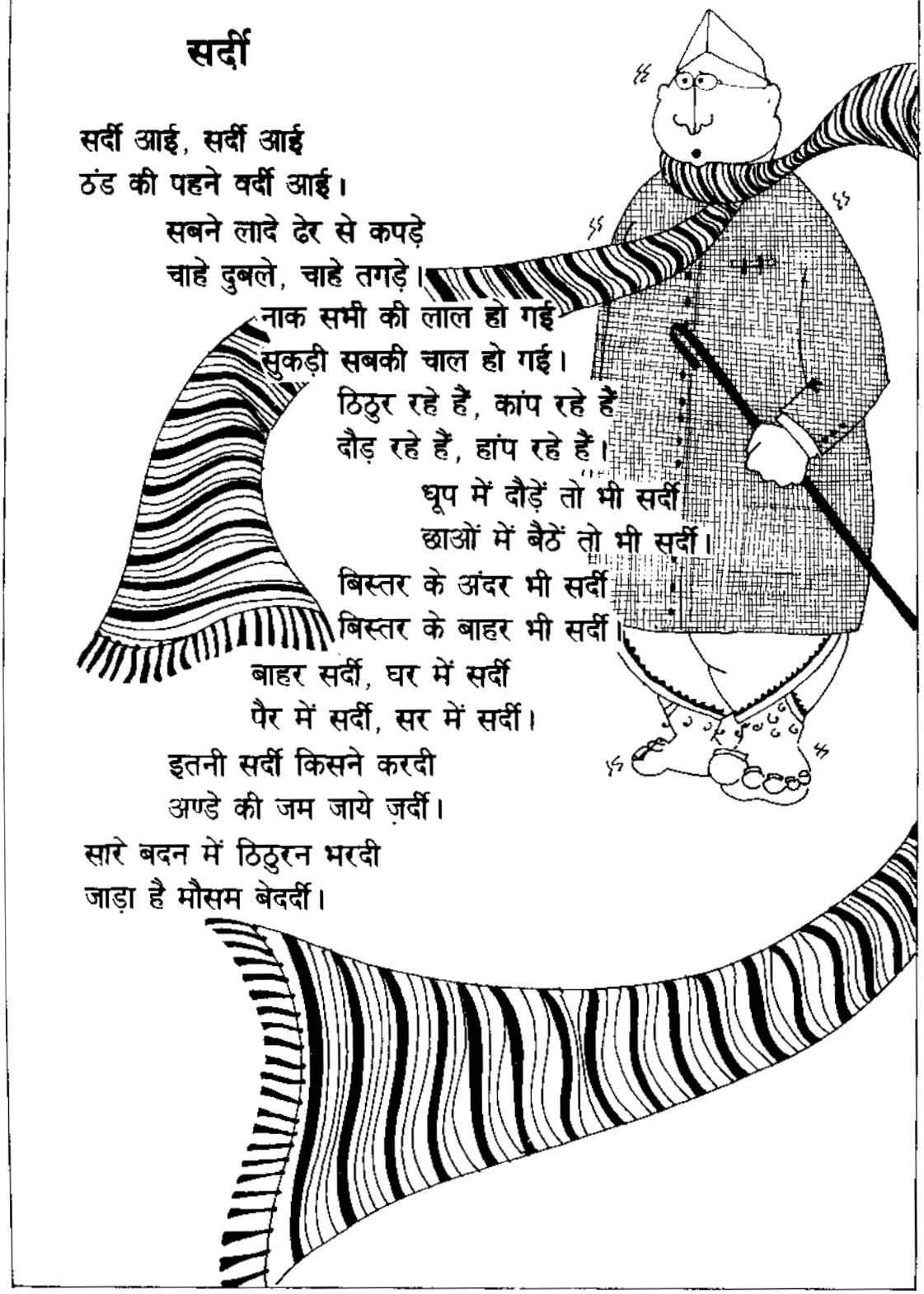

सर्दी आई, सर्दी आई
ठंड की पहने वर्दी आई।
सबने लादे ढेर से कपड़े
चाहे दुबले, चाहे तगड़े।
नाक सभी की लाल हो गई
सुकड़ी सबकी चाल हो गई।
ठिठुर रहे हैं, कांप रहे हैं
दौड़ रहे हैं, हांप रहे हैं।
धूप में दौड़ें तो भी सर्दी
छाओं में बैठें तो भी सर्दी।
बिस्तर के अंदर भी सर्दी
बिस्तर के बाहर भी सर्दी।
बाहर सर्दी, घर में सर्दी
पैर में सर्दी, सर में सर्दी।
इतनी सर्दी किसने करदी
अण्डे की जम जाये ज़र्दी।
सारे बदन में ठिठुरन भरदी
जाड़ा है मौसम बेदर्दी।

समर सिंह की सालगिरह

इक लड़का है छोटा सा
बेपेंदी का लोटा सा
कुछ दुबला, कुछ मोटा सा।

क़द है ऊंचा, भूरे बाल
लाल टिमाटर जैसे गाल
लंबी टांगें, फिरकी चाल।

मम्मा गोरी हैं उसकी
जैसे बालों में खुश्की
दूध मलाई की चुस्की।

पापा उसके लंबू हैं
पापा क्या हैं, बंबू हैं
लंबा चौड़ा तंबू हैं।

बहन है उसकी इक छोटी
जैसे लूडो की गोटी
सर में बांधे दो चोटी।

दादा की खिचड़ी दाढ़ी
दादी की लंबी गाड़ी
लुधियाने में है बाड़ी

तगड़ी है उसकी ख़ाला
पड़ जाये जिससे पाला
लगवा दे मुंह पर ताला।

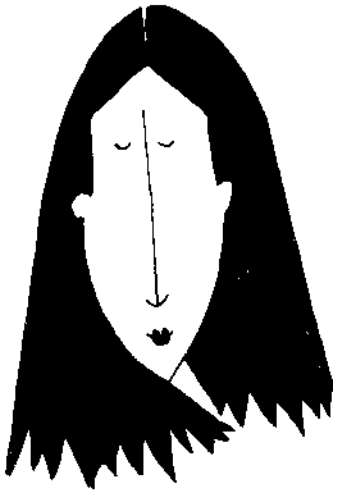

उसके दो-दो मामा हैं
इक पतले, इक गामा हैं
मामा नहीं, डिरामा हैं।

मामी भी उसकी दो हैं
वो तो जैसी हैं, सो हैं
ठीक-ठाक हैं, सो-सो हैं।

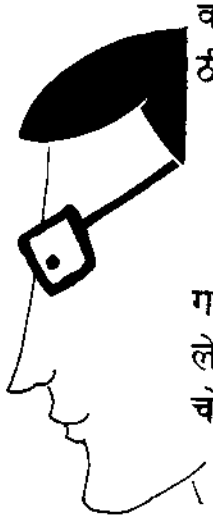

जब भी संडे आता है
नानी के घर जाता है
कितना उधम मचाता है।

गाना उसको आता है
लेकिन नहीं सुनाता है
चोरी छुप्पे गाता है।

नाम है उसका सिंह समर
घर से उसके आई ख़बर
पांच साल की हुई उमर।

उसके घर हम जायेंगे
और ये टेप सुनायेंगे
बढ़िया खाने खायेंगे।

गड़बड़ घोटाला

यह कैसा है घोटाला
कि चाबी में है ताला
कमरे के अंदर घर है
और गाय में है गोशाला।

दांतों के अंदर मुंह है
और सब्ज़ी में है थाली
रूई के अंदर तकिया
और चाय के अंदर प्याली।

टोपी के ऊपर सर है
और कार के ऊपर रस्ता
ऐनक पे लगी हैं आंखें,
कॉपी-किताब में बस्ता।

सर के बल सभी खड़े हैं
पैरों से सूंघ रहे हैं
घुटनों में भूख लगी है
और टख़ने ऊंघ रहे हैं।

मकड़ी में भागे जाला
कीचड़ में बहता नाला
कुछ भी समझ न आये
यह कैसा है घोटाला।

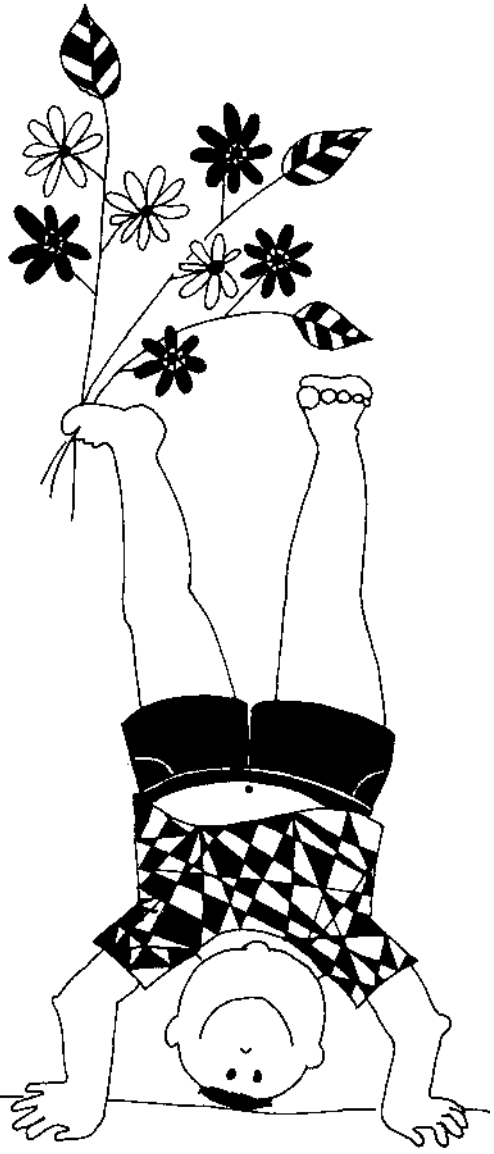

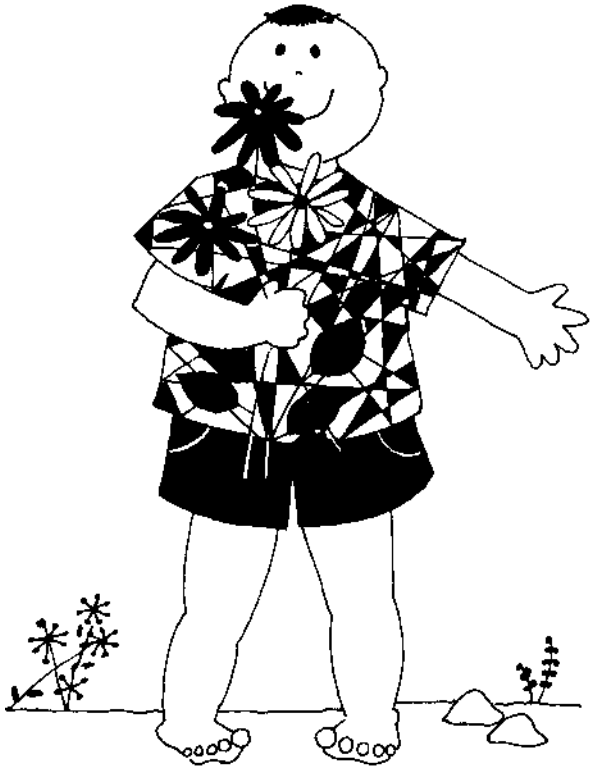

इस घोटाले को टालें
चाबी ताले में डालें
कमरे को घर में लायें
गोशाला में गाय को पालें।

मुंह में हम दांत लगायें
सब्ज़ी से भर लें थाली
रूई तकिए में ठूंसें
चाय से भर लें प्याली।

टोपी को सर पर पहनें
रस्ते पर कार चलायें
आंखों पे लगायें ऐनक
बस्ते में किताबें लायें।

पैरों पे खड़े हो जायें
और नाक से खुशबू सूंघें
भर पेट उड़ायें खाना
और आंख मूंदके ऊंघें।

जाले में मकड़ी भागे
कीचड़ नाले में बहता
अब सब कुछ समझ में आये
कुछ घोटाला ना रहता।

शिव्वी का अंगूठा

शिव्वी का अंगूठा
पता है कैसे टूटा

शिव्वी का अंगूठा
जाने कैसे टूटा।

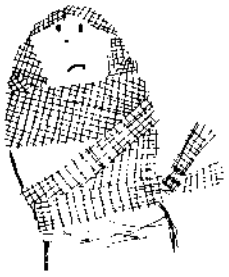

टूटा तो यूं फूला
हाथ स्लिंग में झूला

स्लिंग उतारा, फेंका
ना बांधा, ना सेंका

ठेंगा और भी फूला
हाथ हो गया लूला

टीस ज़ोर से मारी
हाय मरी बेचारी

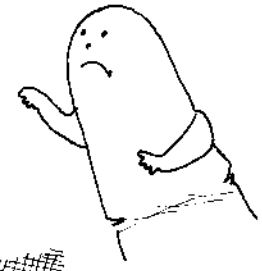

दौड़ी दौड़ी आई
पूरी कथा सुनाई

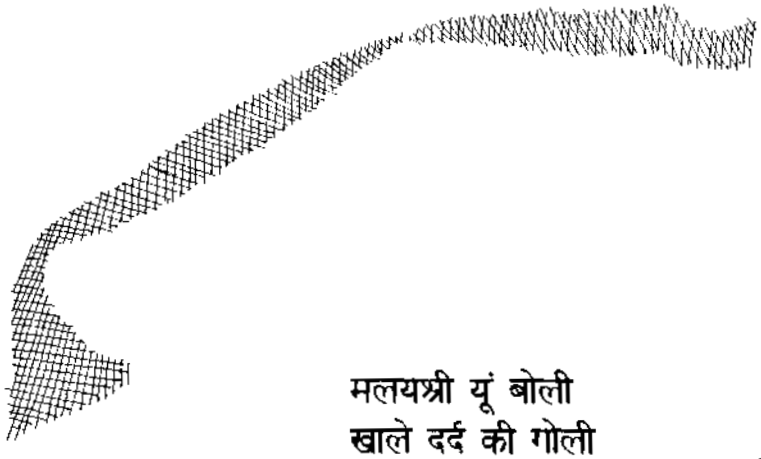

मलयश्री यूं बोली
खाले दर्द की गोली

शिव्वी पड़ गई पीली
हाथ छुड़ाकर चीख़ी

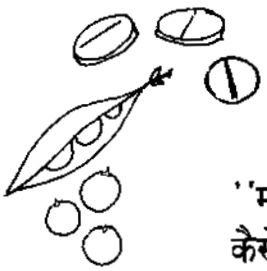

दर्द की गोली माने, गोल
जैसे मटर के दाने गोल

''मटर कभी ना खाऊं,
कैसे इसे चबाऊं?''

ना ही गोली खाई
ना पट्टी कराई।

स्लिंग उतारा, फेंका
ना बांधा, ना सेंका।

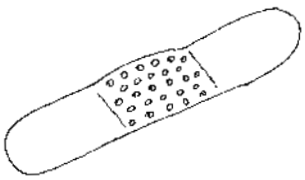

शिव्वी का अंगूठा,
और भी ज़्यादा रूठा।

बाग़ की सैर

कुछ दिन पहले
हम सब बच्चे
छोटे मोटे
पक्के कच्चे
निकले करने सैर।
कुछ ने पहने चप्पल जूते
कुछ थे नंगे पैर।
आगे-आगे बच्चे दौड़े
पीछे पीछे आंटी
कुछ के पांव में चुभ गये कांटे
कुछ के पैर में कांटी।
रोते धोते, हंसते गाते
पहुंचे लोधी बाग़
वहां पे चारों ओर बिछा था
हरे रंग का साग:
''मूरख बच्चो, साग नहीं मैं
मुझको कहते घास
उछलो कूदो, उधम मचाओ
आओ मेरे पास।

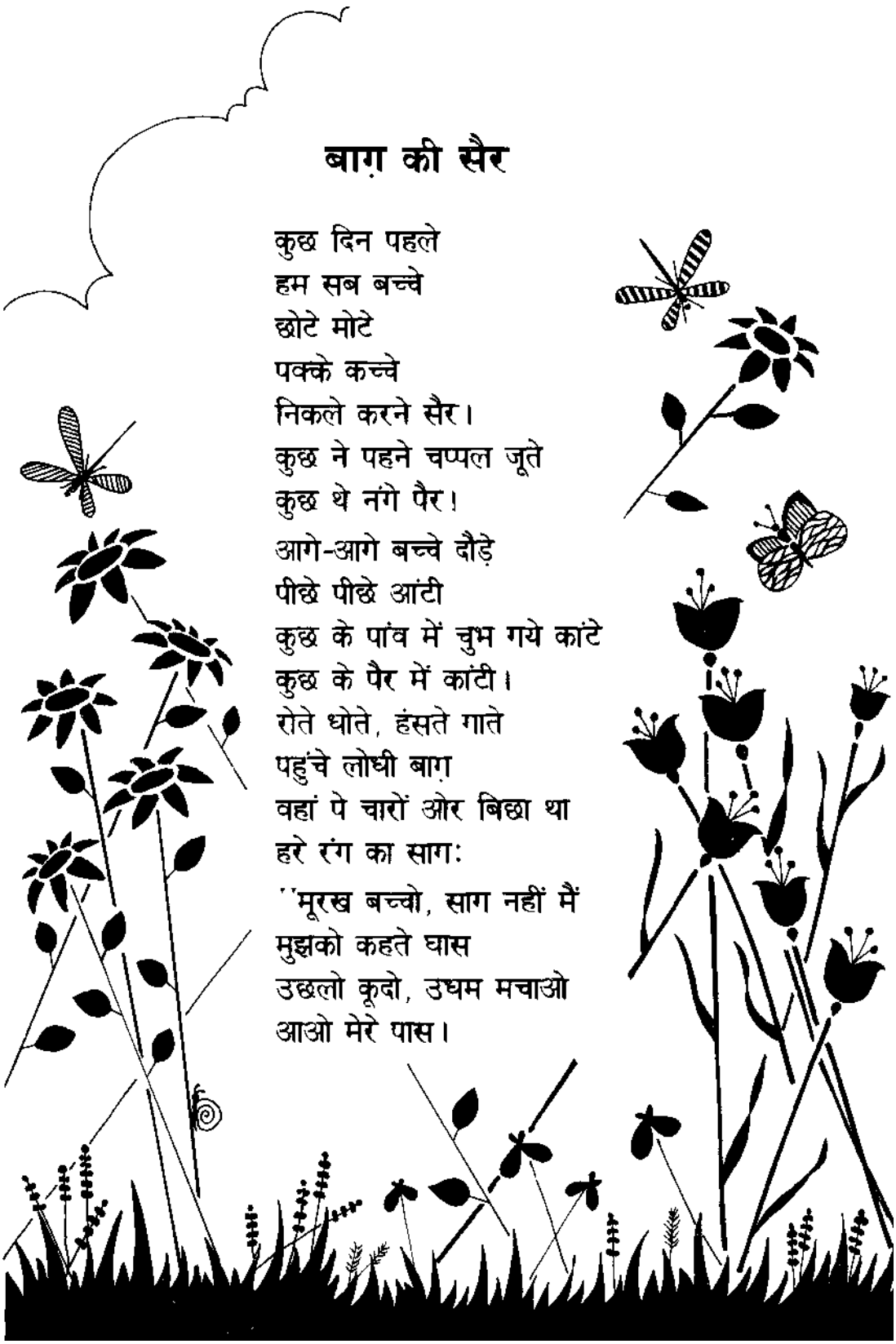

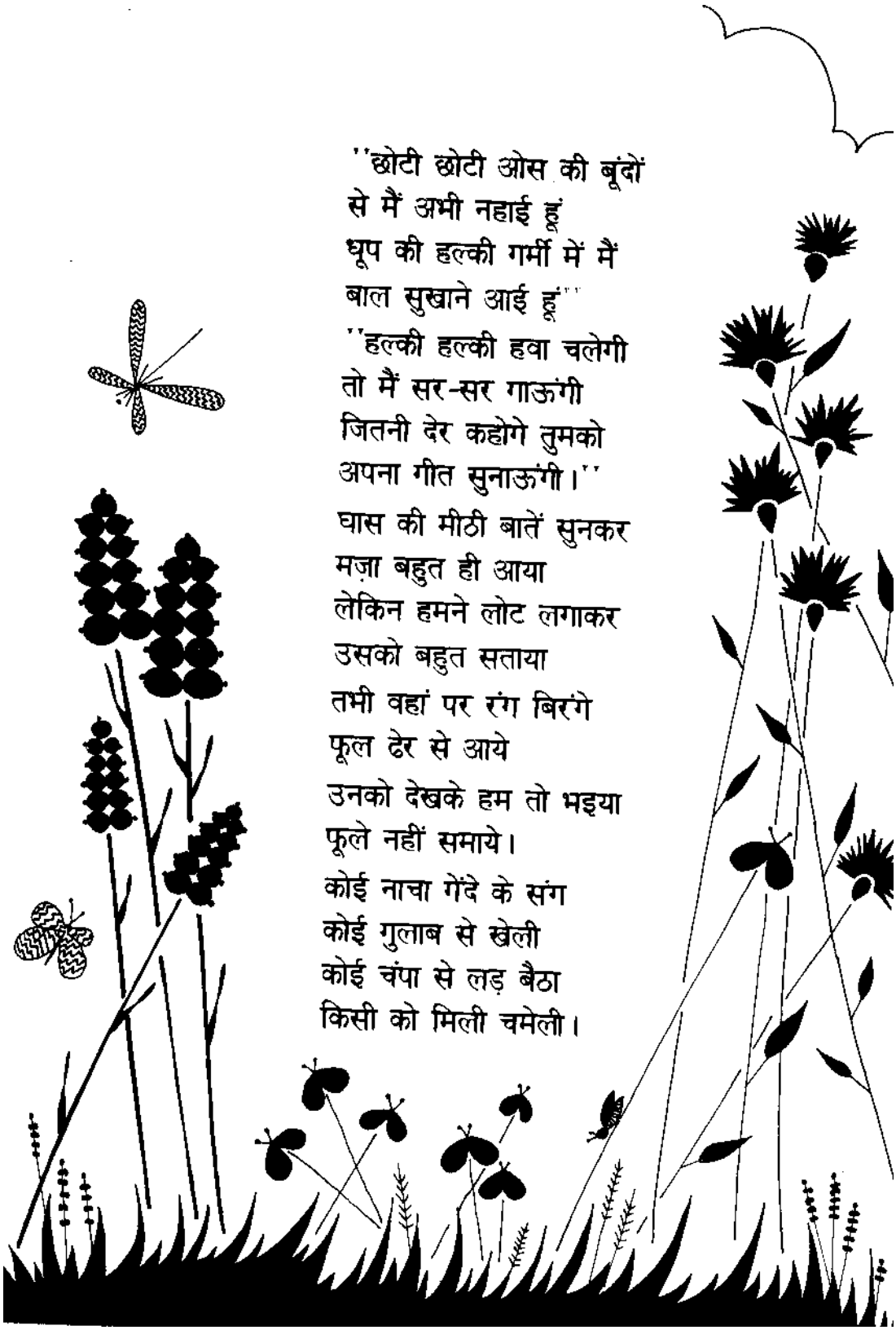

"छोटी छोटी ओस की बूंदों
से मैं अभी नहाई हूं
धूप की हल्की गर्मी में मैं
बाल सुखाने आई हूं"
"हल्की हल्की हवा चलेगी
तो मैं सर-सर गाऊंगी
जितनी देर कहोगे तुमको
अपना गीत सुनाऊंगी।"
घास की मीठी बातें सुनकर
मज़ा बहुत ही आया
लेकिन हमने लोट लगाकर
उसको बहुत सताया
तभी वहां पर रंग बिरंगे
फूल ढेर से आये
उनको देखके हम तो भइया
फूले नहीं समाये।
कोई नाचा गेंदे के संग
कोई गुलाब से खेली
कोई चंपा से लड़ बैठा
किसी को मिली चमेली।

थोड़ी देर में चिड़ियां आईं,
तोता, मैना, बुलबुल।
गौरय्या, बगले और बत्तख,
लगे मचाने कुलबुल।
चिड़ियों, घास और फूलों के संग,
इतना उधम मचाया
हाथ में मोटा डंडा लेकर
माली भागा आया।
हमको उसने ज़ोर से डांटा
और डंडा दिखलाया:
"पाजी बच्चो, क्या स्कूल में
तुमको यही सिखाया?"
तभी अंजलि आंटी बोलीं:
"माली भइया आओ
बच्चों के संग बैठके तुम भी,
थोड़ा खाना खाओ।"
माली चाचा दांत चियारे
पास हमारे आये,
हरी घास पे बैठके हमने,
अपने खाने खाये।

पुराने बच्चे

हम पहली के बच्चे हैं
अधरे पक्के कच्चे हैं।

एक साल हो गया हमें
इस विद्यालय में आये
पिछले पूरे साल में हमने
कितने मज़े उड़ाये।

रंग बिरंगे क़ाग़ज़ काटे
काट काट चिपकाये
खेले कूदे, पढ़े लिखे
और ढेरों गाने गाये।

पूरी छोले, इडली सांभर
क्या क्या माल उड़ाये
घर जा कर अपने स्कूल के
किस्से खूब सुनाये।

आने वाले साल में भी हम
मिलकर मौज उड़ायेंगे
नई नई चीज़ें सीखेंगे
बढ़िया गाने गायेंगे।

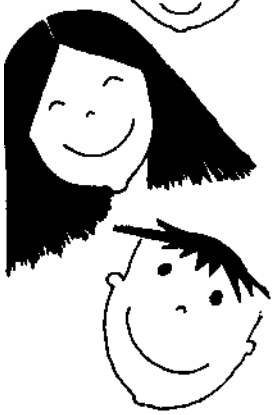

तुम सब जो इस साल आये हो
साथ हमारे खेलोगे
साथ साथ गाने गाओगे
संग संग झूले झूलोगे।

धीरे धीरे साथ-साथ हम
ऊपर चढ़ते जायेंगे
नये नये बच्चों को ऐसे
गाने सदा सुनायेंगे।

राजू और काजू

एक था राजू एक था काजू
दोनों पक्के यार
इक दूजे के थामे बाज़ू
जा पहुंचा बाज़ार।

भीड़ लगी थी धक्कम धक्का
देखके रह गये हक्का बक्का
इधर उधर वह लगे ताकने
यहां झांकने वहां झांकने।

इधर दुकानें उधर दुकानें
अंदर और बाहर दुकानें
पटरी पर छोटी दुकानें
बिल्डिंग में मोटी दुकानें
छाबड़ियों में सजी दुकानें
सामानों से रजी दुकानें।

सभी जगह पर भरे पड़े थे
दीवे और पटाख़े
फुलझड़ियां, सुर्री, हवाइयां
गोले और चटाख़े।

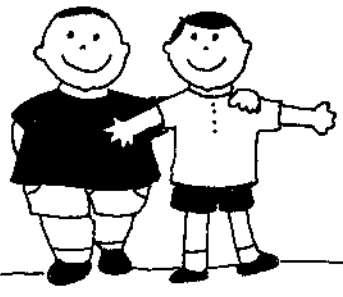

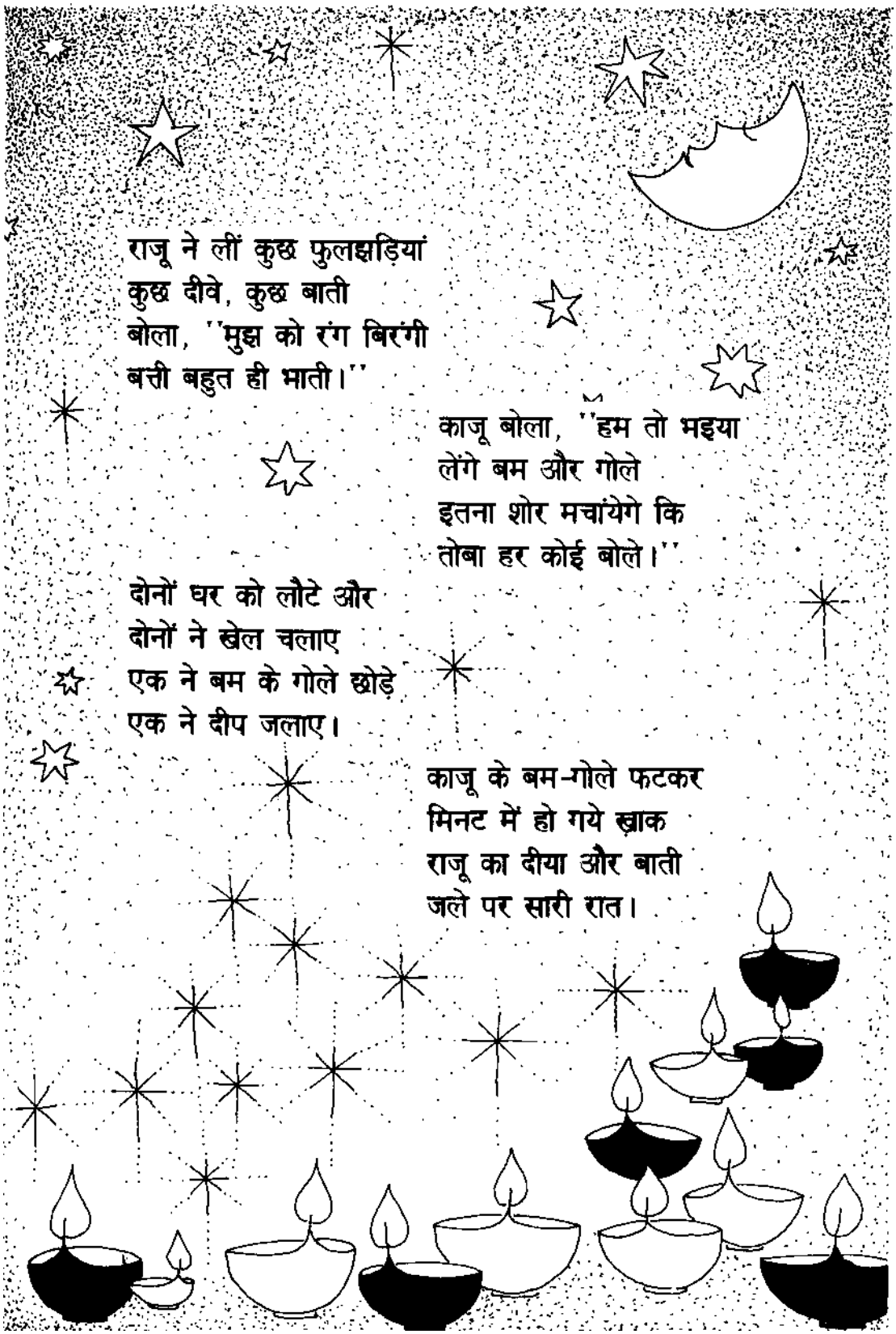

राजू ने लीं कुछ फुलझड़ियां
कुछ दीवे, कुछ बाती
बोला, "मुझ को रंग बिरंगी
बत्ती बहुत ही भाती।"

काजू बोला, "हम तो भइया
लेंगे बम और गोले
इतना शोर मचायेंगे कि
तोबा हर कोई बोले।"

दोनों घर को लौटे और
दोनों ने खेल चलाए
एक ने बम के गोले छोड़े
एक ने दीप जलाए।

काजू के बम-गोले फटकर
मिनट में हो गये ख़ाक
राजू का दीया और बाती
जले पर सारी रात।

बांसुरीवाला

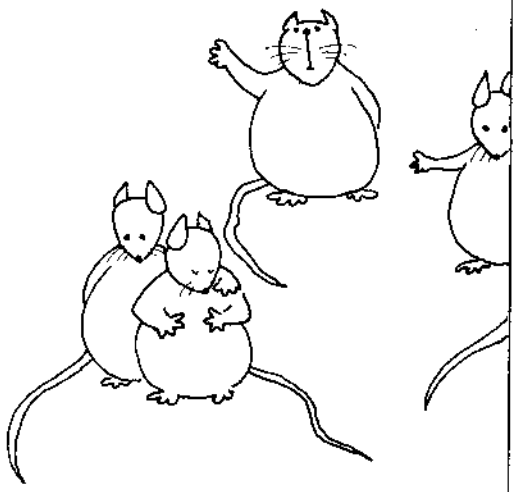

बात सात सौ साल पुरानी
सुनो ध्यान से प्यारे
हैम्लिन नामक एक शहर था
वीज़र नदी किनारे।

यूं तो शहर बहुत सुन्दर था
हैम्लिन जिसका नाम
मगर वहां के लोगों का
हो गया था चैन हराम।

इतने चूहे, इतने चूहे
गिनती हो गई मुश्किल
जिधर भी देखो, जहां भी देखो
करते दिखते किल-बिल।

बाहर चूहे, घर में चूहे
दरवाजे और दर में चूहे
खिड़की और आलों में चूहे
थाली और प्यालों में चूहे।

ट्रंक में और संदूक में चूहे
फ़ौजी की बंदूक में चूहे
अफ़सर की गाड़ी में चूहे
नौकर की दाढ़ी में चूहे।

पूरब पच्छिम, उत्तर दक्खिन
जिधर भी देखो चूहे
ऊपर नीचे आगे पीछे
जिधर भी देखो चूहे।

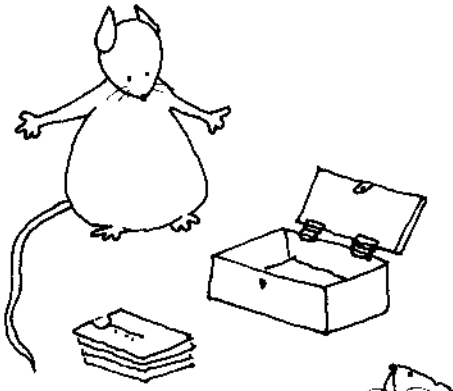

दुबले चूहे, मोटे चूहे
लंबे चूहे, छोटे चूहे
काले चूहे, गोरे चूहे
भूखे और चटोरे चूहे।

चूहे भी वो ऐसे चूहे
बिल्ली को खा जाएं
कुत्ते उन से डर के भागें
चीलें जान बचाएं।

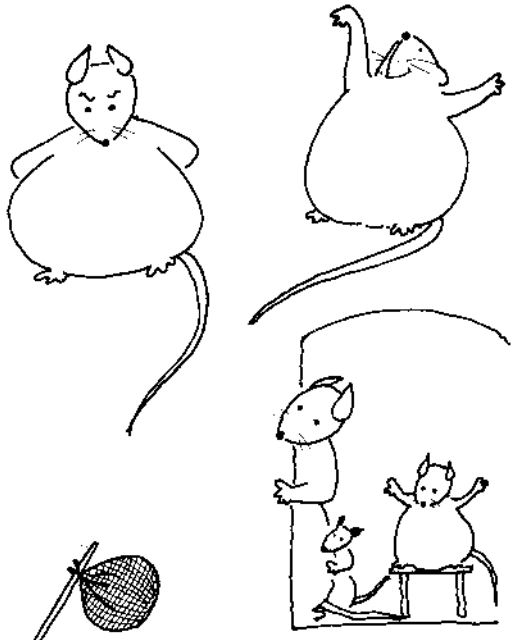

चूहों से घबराकर
राजा ने ये किया ऐलान
जो उनसे पीछा छुटवाये
पाये ढेर इनाम।

सुनकर ये ऐलान वहां पर
पहुंचा एक मदारी
मस्त क़लंदर नाम था उसका
मुंह पर लंबी दाढ़ी।

झोले से बंसी निकालकर
मीठी तान बजाई
जिसको सुनकर चूहा सेना
दौड़ी दौड़ी आई।

कोनों खुदरों से निकले
और निकले महल अटारी से
नाले नाली से निकले
और निकले बक्स पिटारी से।

घर की चौखट को फलांगकर
आये ढेरों चूहे
छत के ऊपर से छलांग कर
आये ढेरों चूहे।

लाखों चूहों का जलूस
चल पड़ा मदारी के पीछे
जैसे कोई डोरी उनको
लिये जा रही हो खींचे।

आगे-आगे चला मदारी
पीछे चूहे सारे
चलते चलते वो जा पहुंचे
वीज़र नदी किनारे।

वहां पहुंच कर भी ना ठहरा
वो छः फुटा मदारी
उतर गया दरिया के अंदर
पीछे पलटन सारी।

ले गया मदारी सब चूहों को
वीज़र नदी के अंदर
एक भी ज़िंदा नहीं बचा
सब डूबे नदी के अंदर।

चूहों को यूं मार मदारी
राजा के घर आया
अपने इनाम का वादा उसको
फ़ौरन याद दिलाया।

राजा बोला: "क्या कहते हो
मिस्टर मस्त क़लंदर
चूहे तो ख़ुद ही जा डूबे
वीज़र नदी के अंदर।

कौन सा तुमने कद्दू में
मारा है ऐसा तीर
जिसके कारण पुरस्कार दें
तुमको मस्त फ़क़ीर?"

देखके ऐसी मक्कारी
वो रह गया हक्का-बक्का
उसके भोले मन को इससे
लगा ज़ोर का धक्का।

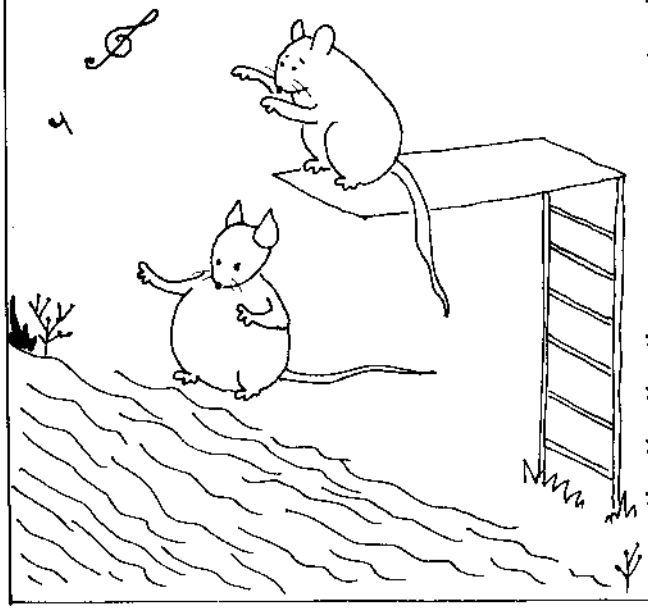

गुस्से से हो आगबबूला
महल से बाहर आया
थैले से बंसी निकाल कर
सुंदर राग बजाया।

सुनकर उसकी बंसी की धुन
बच्चे दौड़े आये
कुटियाओं, बंगलों, महलों से
दौड़े-दौड़े आये।

लंबे बच्चे, छोटे बच्चे
दुबले बच्चे, मोटे बच्चे
दूर के बच्चे, पास के बच्चे
साधारण और ख़ास से बच्चे।

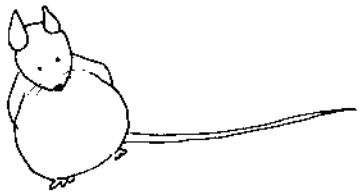

हंसते बच्चे, रोते बच्चे
जाग रहे और सोते बच्चे
गांव के बच्चे, नगर के बच्चे
गली, मुहल्ले, डगर के बच्चे।

लाखों बच्चों का जमघट
चल पड़ा मदारी के पीछे
जैसे कोई जादू उनको
लिए जा रहा हो खींचे।

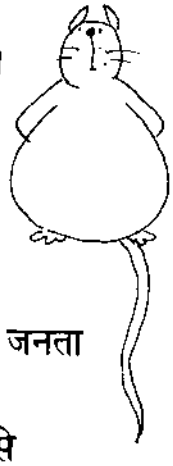

ले गया दूर शहर से उनको
वो छः फुटा मदारी
नहीं रोक पाई बच्चों को
नगर की जनता सारी।

बिगड़ गयी हैम्लिन की जनता
पहुंची राजा के द्वारे
बोली: "तेरी बेईमानी से
बच्चे गए हमारे।

नहीं चाहिए ऐसा राजा
करता जो मनमानी
वादा करके झुठला देता
ये कैसी बेईमानी"

राजा से गद्दी छीनी
दे डाला देशनिकाला
और हैम्लिन का राज पाट
खुद, जनता ने ही संभाला।

नये राज ने मस्त मदारी
को फ़ौरन बुलवाया
माफ़ी मांगी और मुंहमांगा
पुरस्कार दिलवाया।

सारे बच्चे वापस पहुंचे
अपने अपने घर पे
पूरे शहर में खुशी मनी
और दीये जले दर-दर पे।

छोटी का कमाल

समरसिंह थे बहुत अकड़ते, 'छोटी' कितनी छोटी

''मैं हूं आलू भरा पराठा, 'छोटी' पतली रोटी

''मैं लंबा और मोटा तगड़ा, 'छोटी' पतली दुबली

''मैं मोटा पटसन का रस्सा, 'छोटी' कच्ची सुतली''

लेकिन जब बैठे सी-सॉ पर होश ठिकाने आये

छोटी जा पहुंची चोटी पर, समरसिंह चकराये।

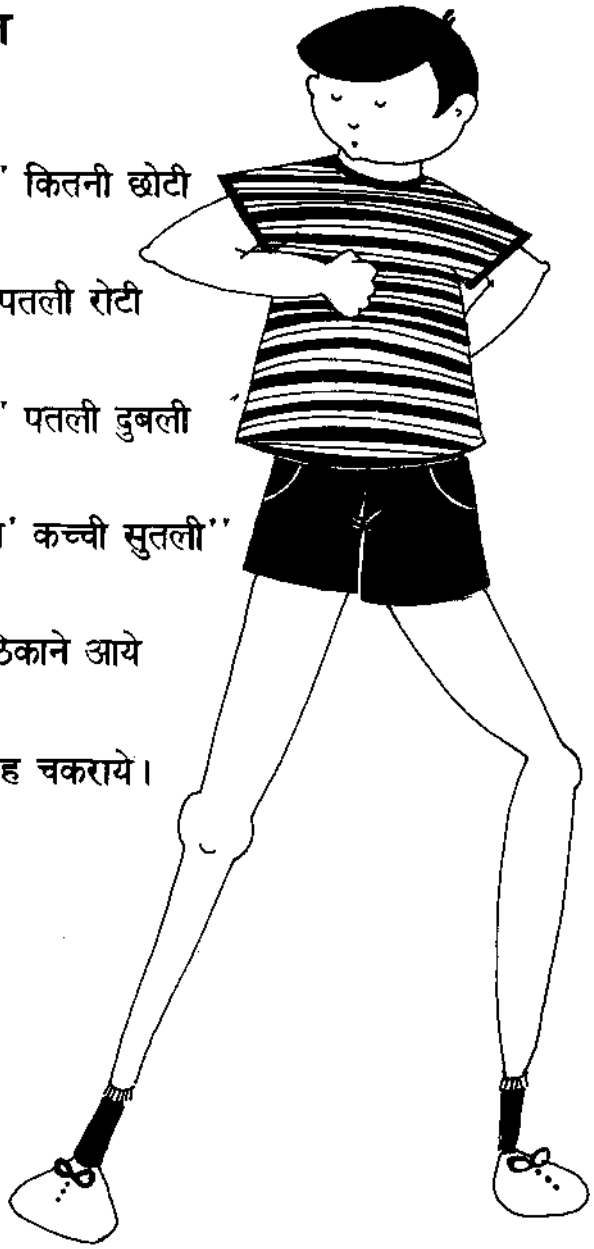

तबियत जल्दी ठीक करो

तबियत जल्दी ठीक करो
पीले खां से नहीं डरो।

इक हुंकार लगाओ तुम
जांडिस दूर भगाओ तुम

कुछ दिन घी-मक्खन मत खाना
अंशु से पालक पकवाना

पापा से मूली कटवाना
अम्मां से गन्ने मंगवाना

यूं ही अपना पेट भरो
तबियत जल्दी ठीक करो।

जाती सर्दी

घर के बाहर खिसक रही है
धीरे-धीरे सर्दी
आसमान भी खोल रहा है
घिसी सलेटी वर्दी।

सुबह सवेरे सूरज आकर
धूप की चादर खोले
जाड़ा पंजों के बल चलता
अपनी राह को होले।

धूप की गर्मी में सिक जाएं
घर के कोने-खुदरे
एड़ी, तलवों और उंगलियों
की हालत भी सुधरे।

पहले उतरें ऊनी मोज़े
फिर मफ़लर भी जाएं
अम्मां शॉल को तह कर रख दें
अब्बा कोट हटाएं।

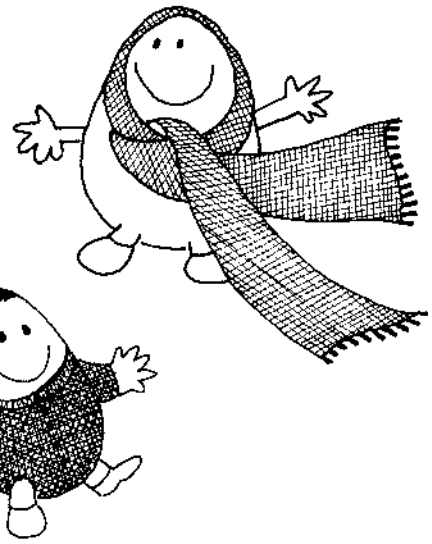

सुबह बिस्तर से उठना भी
हो जाये आसान
नल के पानी से मुंह धोने
में ना निकलें प्राण।

आसमान नीला हो जाये
बादल नज़र न आएं
चिड़ियां फिर से शोर मचाएं
पेड़ हरे हो जाएं।

गर्मी से जब सर्दी आयी
तब भी लगी थी अच्छी
अब सर्दी से गर्मी आती
वह भी लगती अच्छी।

सर्दी अच्छी, गर्मी अच्छी
सारे मौसम अच्छे
हर मौसम में खुश रहते
हम बच्चे कितने अच्छे।

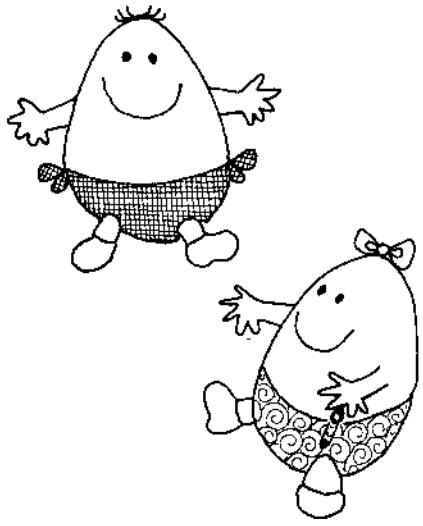

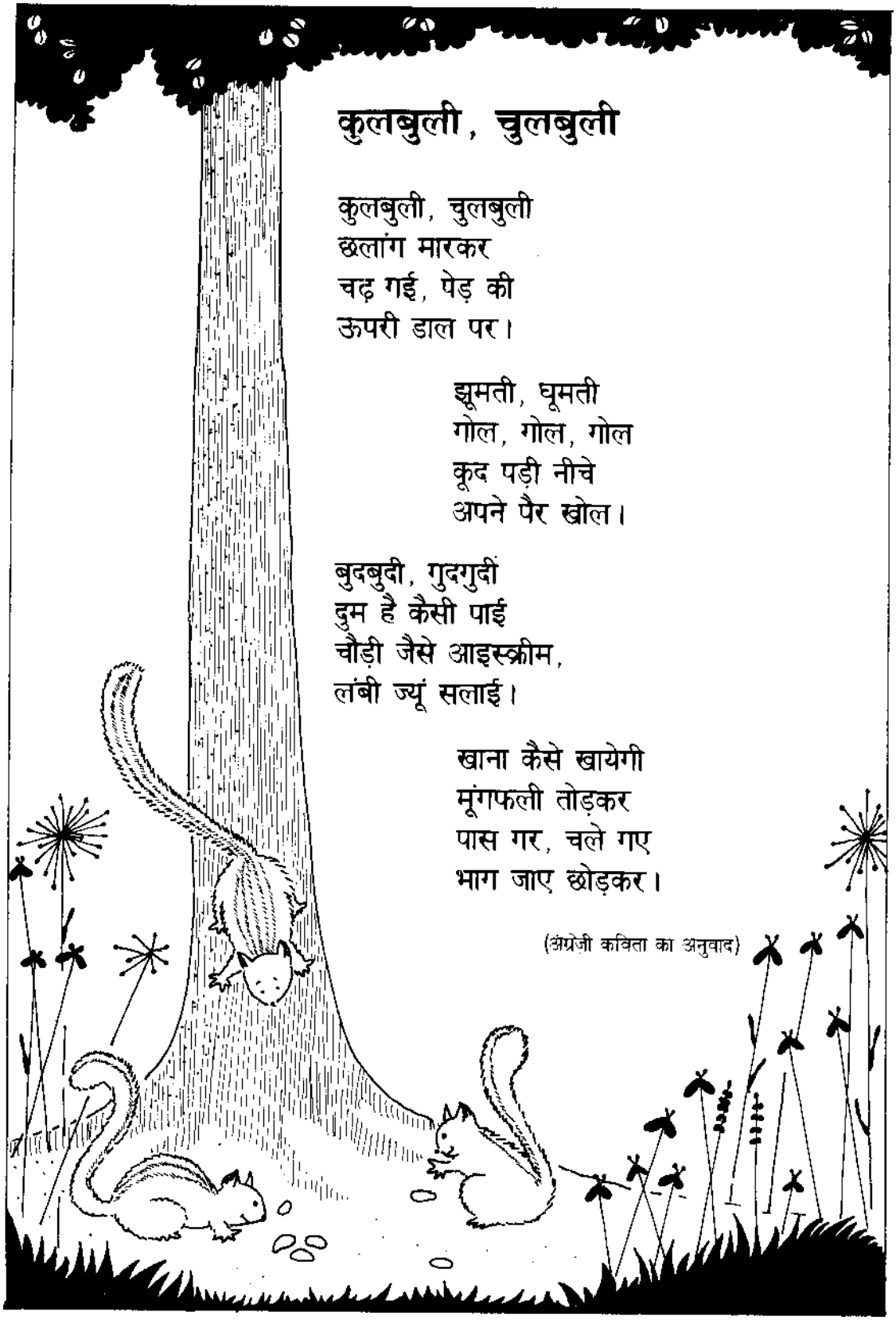

कुलबुली, चुलबुली

कुलबुली, चुलबुली
छलांग मारकर
चढ़ गई, पेड़ की
ऊपरी डाल पर।

झूमती, घूमती
गोल, गोल, गोल
कूद पड़ी नीचे
अपने पैर खोल।

बुदबुदी, गुदगुदी
दुम है कैसी पाई
चौड़ी जैसे आइस्क्रीम,
लंबी ज्यूं सलाई।

खाना कैसे खायेगी
मूंगफली तोड़कर
पास गर, चले गए
भाग जाए छोड़कर।

(अंग्रेज़ी कविता का अनुवाद)

मच्छर पहलवान

बात की बात
खुराफ़ात की खुराफ़ात
बेरिया का पत्ता
सवा सत्रह हाथ
उसपे ठहरी बारात
मच्छर ने मारी एड़
तो टूट गया पेड़
पत्ता गया मुड़
बारात गई उड़।

पिल्ला

नीतू का था पिल्ला एक
बदन पे उसके रुएं अनेक
छोटी टांगें लंबी पूंछ
भूरी दाढ़ी, काली मूंछ
मक्खी से वह लड़ता था
खड़े-खड़े गिर पड़ता था।

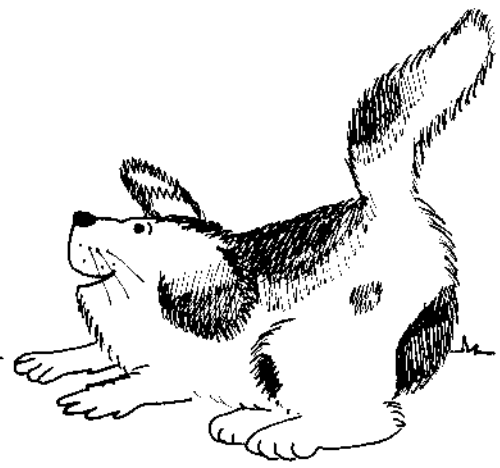

मकड़ी का जाला

हांडी लेके बूढ्ढ एक दाढ़ी मूंछ वाला
दही के बड़ों में भूने मकड़ी का जाला
सर मटकाये, हौले-हौले कुछ गाये
जैसे कोई पंडित हवन कराये

ऊल-जलूल बोले, नाहीं पड़े पल्ले:
"मकड़ी के जाले में दही के भल्ले।"
टांट गरमाये, लाल आंखें दिखलाये,
ऐसे चिल्लाये: "तेरी समझ न आये?

घोड़े की दुम, तेरी खोपड़ी है गुम
बक-बक करे नाहीं कुछ मालुम
हर मकड़ी के चार मोहल्ले
जिनमे बिकते दही के भल्ले।"

काटे-पीटे, रोज़ रोज़ लिखे नई गिनती
करे, आती-जाती हर मकड़ी से विनती:
"आओ रानी, देखो ज़रा हांडी में क्या है
दही के भल्लों का कैसा मज़ा है

हांडी में घुस कर नाच दिखाओ
अपनी डोरी से जाले बनाओ
हांडी में भर दो जाले ही जाले
ऊपर से मैं लगवा दूंगा ताले
फिर खाना तुम दही के भल्ले
हांडी के अंदर बैठ इकल्ले।"

ऐसे हांडी लेके बूढ्ढ दाढ़ी मूंछ वाला
दही के बड़ों में भूने मकड़ी का जाला।

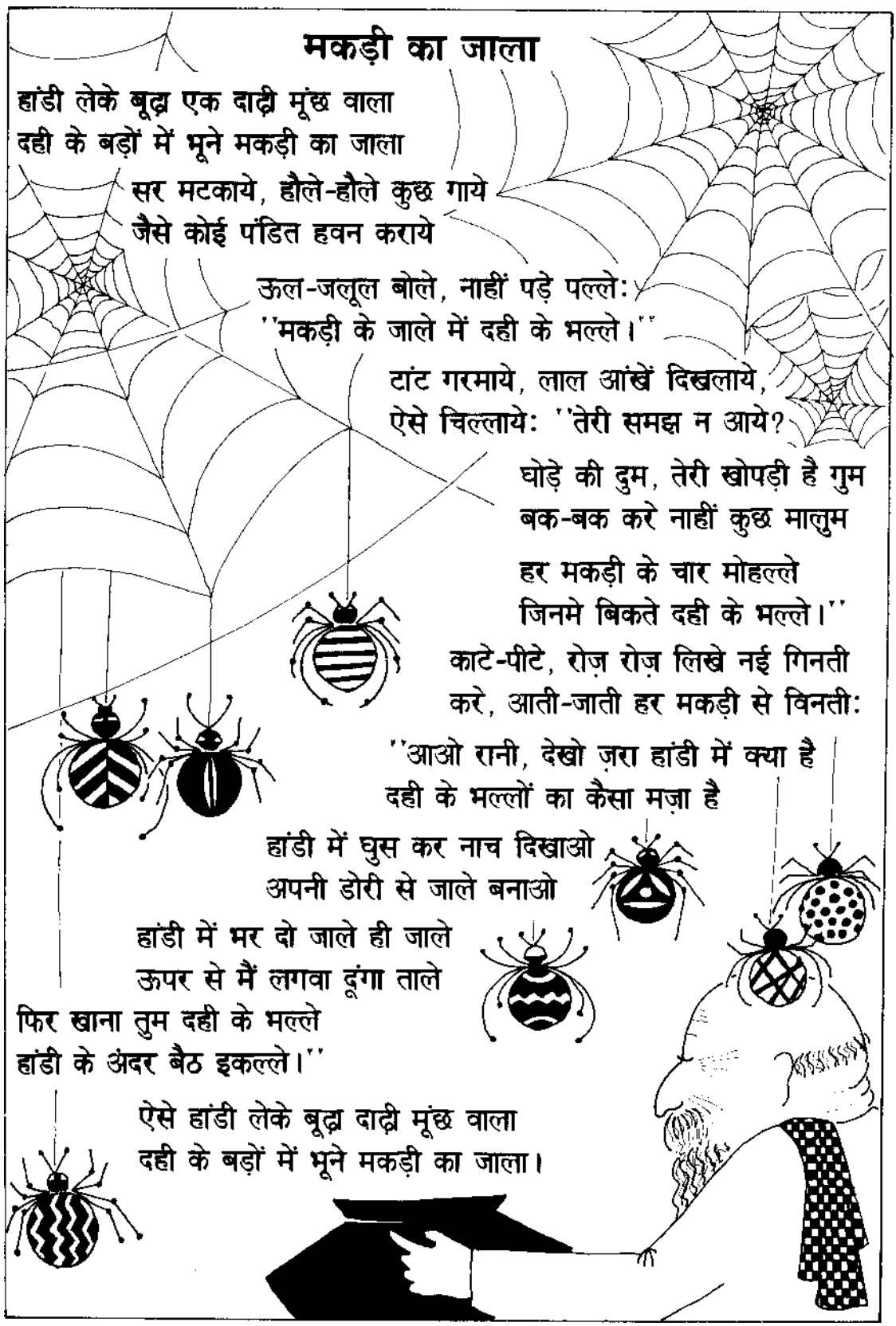

पेड़

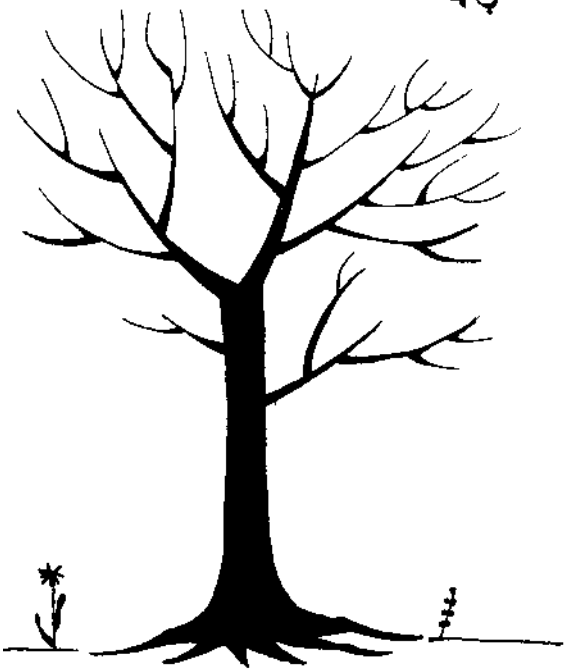

आओ, इस जंगल में आओ
मत घबराओ
मैं, इस जंगल का एक पेड़
तुम्हें बुलाता हूं।
अपनी कथा सुनाता हूं
आओ, अपने साथियों से मिलवाता हूं।
आओ, छूकर देखो मेरा तना
सीधा और मज़बूत
और ऊपर
मेरी पतली, बल खाती शाखों को देखो
देखो अनगिनत टहनियों को।
क्या, पूछते हो पत्ते किधर गए?
मेरे दोस्त,
वो तो पिछले पतझड़ में गिर गए!
लेकिन जल्द ही फिर निकल आएंगे
मेरी डालियों पर लद जाएंगे।

मेरी जड़ें
नहीं दिखतीं तुम्हें।
लेकिन वो हैं!
ज़मीन के नीचे
गहराई तक फैली हुई।
वही सोखती हैं
ज़मीन से पानी,
मेरी प्यास बुझाने को,
मुझे पत्तों से सजाने को।

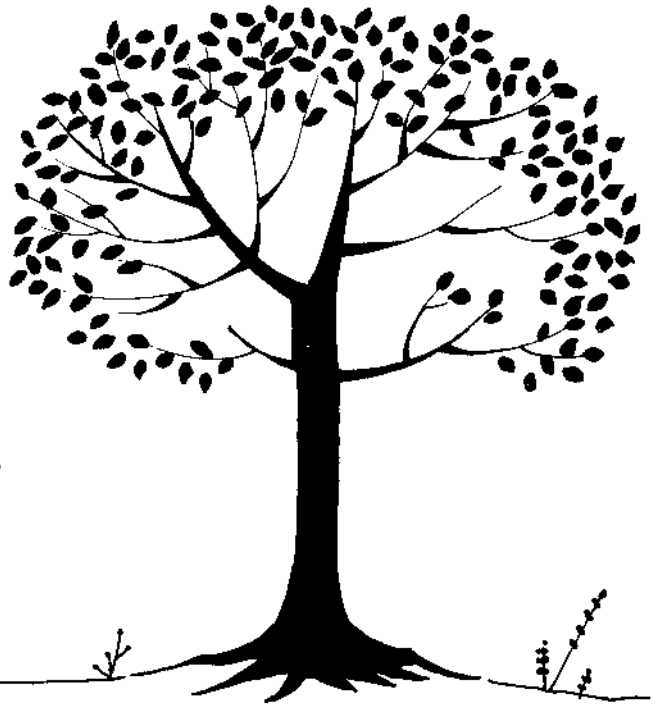

लो, फूट आये मेरे पत्ते,
हरे भरे मेरे कपड़े-लत्ते
लेकिन ये मेरी पोशाक ही नहीं
मेरे पोषक भी हैं।
हवा से खींचते हैं सांस
और सूरज से गर्मी
और बनाते हैं मेरी खुराक।

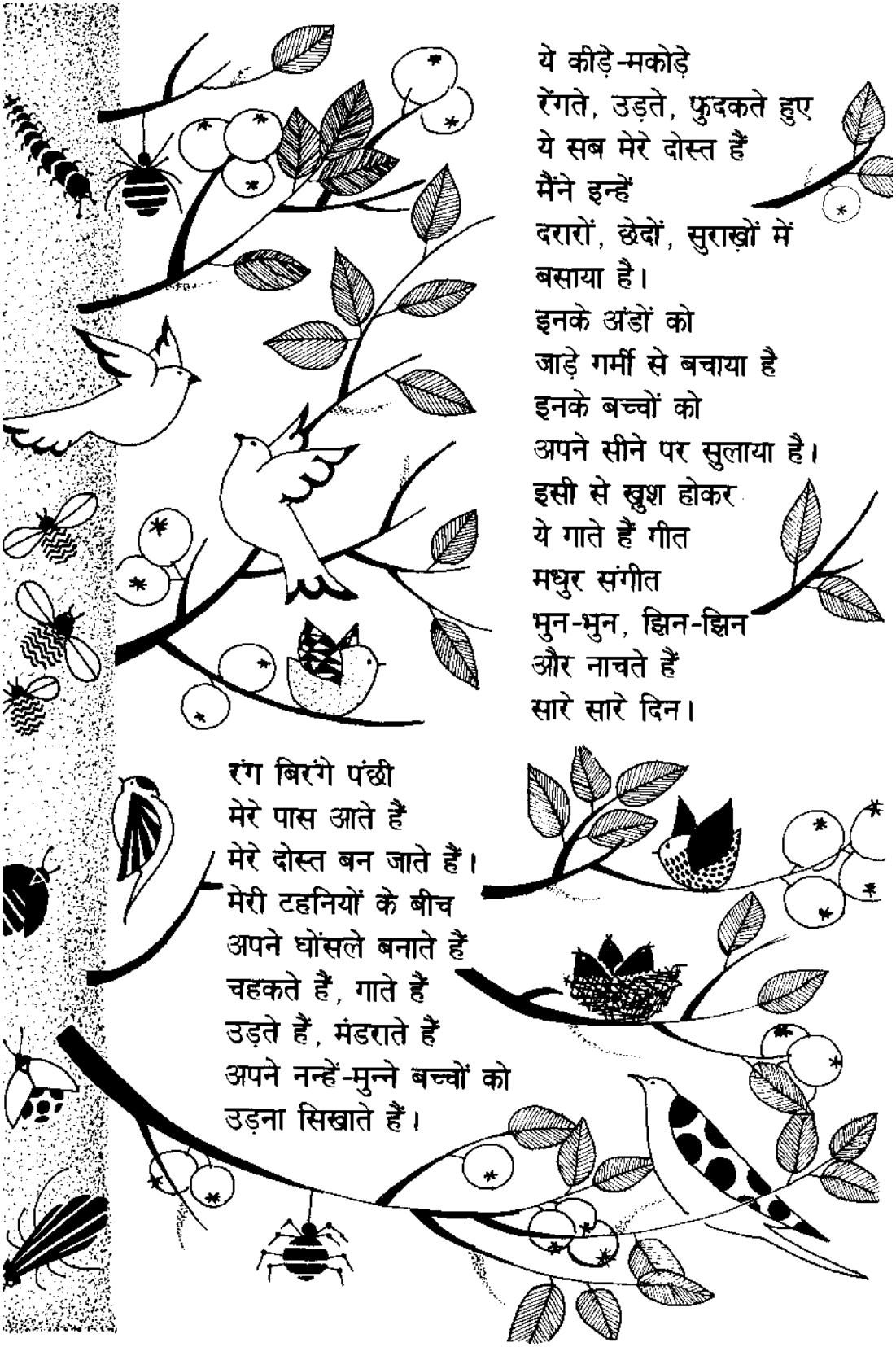

ये कीड़े-मकोड़े
रेंगते, उड़ते, फुदकते हुए
ये सब मेरे दोस्त हैं
मैंने इन्हें
दरारों, छेदों, सुराख़ों में
बसाया है।
इनके अंडों को
जाड़े गर्मी से बचाया है
इनके बच्चों को
अपने सीने पर सुलाया है।
इसी से खुश होकर
ये गाते हैं गीत
मधुर संगीत
भुन-भुन, झिन-झिन
और नाचते हैं
सारे सारे दिन।

रंग बिरंगे पंछी
मेरे पास आते हैं
मेरे दोस्त बन जाते हैं।
मेरी टहनियों के बीच
अपने घोंसले बनाते हैं
चहकते हैं, गाते हैं
उड़ते हैं, मंडराते हैं
अपने नन्हें-मुन्ने बच्चों को
उड़ना सिखाते हैं।

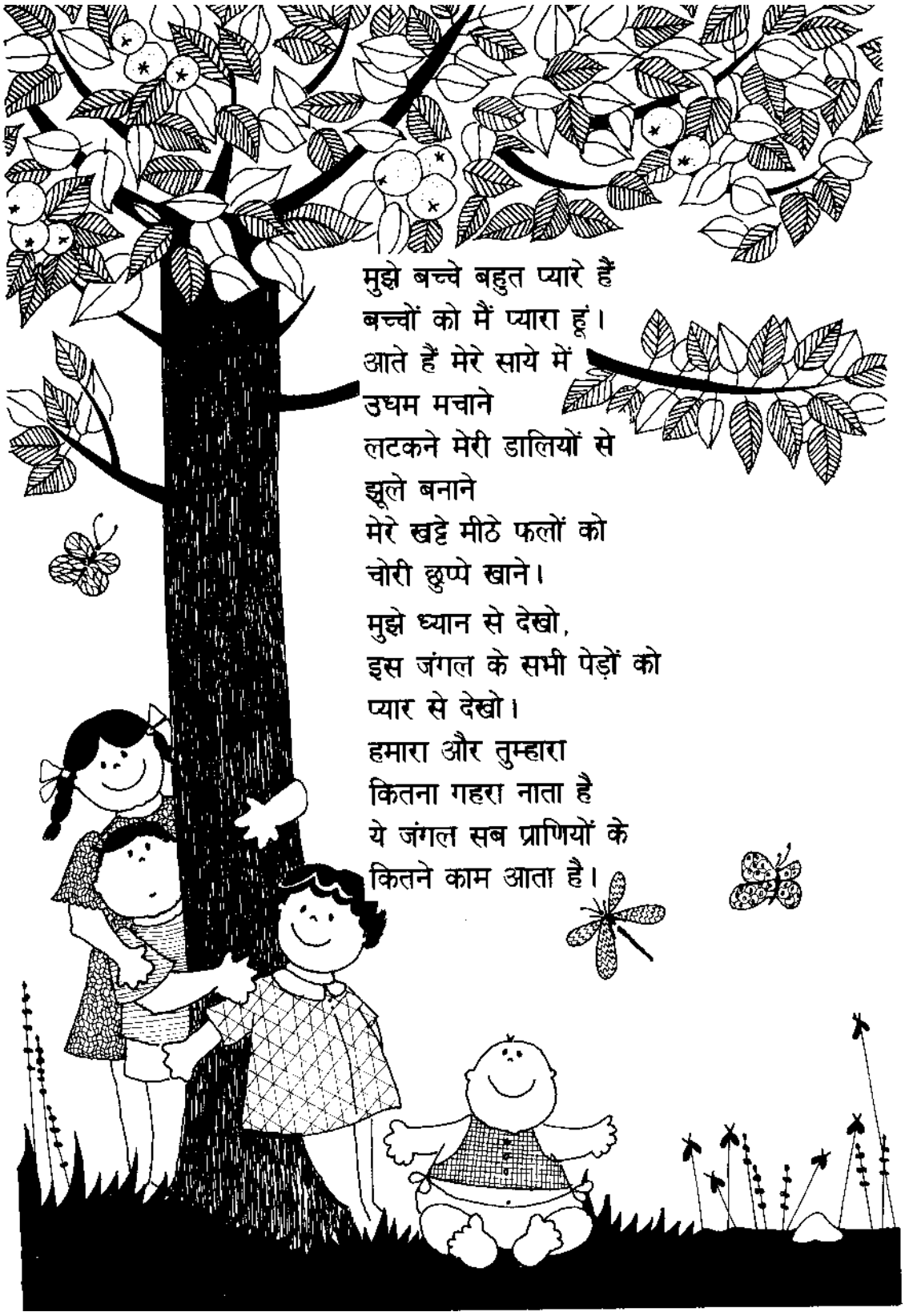

मुझे बच्चे बहुत प्यारे हैं
बच्चों को मैं प्यारा हूं।
आते हैं मेरे साये में
उधम मचाने
लटकने मेरी डालियों से
झूले बनाने
मेरे खट्टे मीठे फलों को
चोरी छुप्पे खाने।
मुझे ध्यान से देखो,
इस जंगल के सभी पेड़ों को
प्यार से देखो।
हमारा और तुम्हारा
कितना गहरा नाता है
ये जंगल सब प्राणियों के
कितने काम आता है।

मेरी लकड़ी से बनी हैं
तुम्हारी मेज़ें कुर्सियां
तुम्हारे सोने की चारपाई
तुम्हारे दरवाज़े खिड़कियां
और तुम्हारी पेंसिल।
टीचर से पूछो,
वो बतलाएंगी
कि मैं बारिश भी करवाता हूं
मिट्टी को बहने से बचाता हूं।
बाढ़ भी रुकवाता हूं
और सूखा भी भगाता हूं।
ये पूरा जंगल तुम्हारे काम आता है
तुम्हें कितना सुख पहुंचाता है।

लेकिन मुनाफ़ाख़ोर ब्योपारी
इसे अंधाधुंध कटवाता है
नये पेड़ नहीं लगवाता है।
रोको, रोको
उस लोभी को रोको,
ऐसा करने से उसे टोको।
नहीं तो एक दिन
ये जंगल ख़त्म हो जायेगा,
सिर्फ़ ठूंठों का
एक शमशान रह जायेगा।

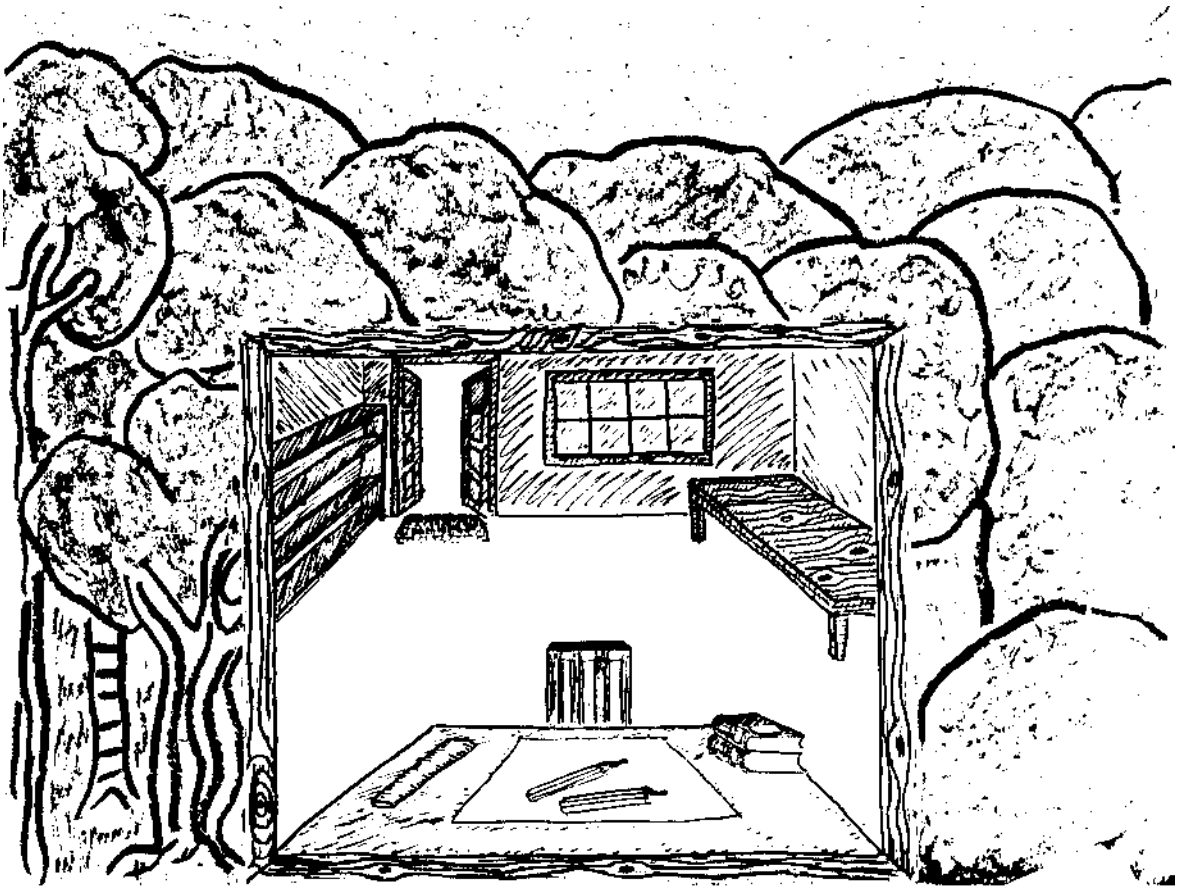

सफ़दर हाश्मी